Dr. Amardeep
Assistant Professor in History
P.G. Dept. of History
Govt. College Birohar, Jhajjar

Aazadi Ka Amrit Mahatosav Activities in 2021,2022 & 2023

1. Dr. Amardeep delivered the keynote address on Salt Satyagraha: The Movement of Common Man Against the British Empire" in Special Seminar organized in celebration of 75th Year of Independence in Aazadi Ka Amrit Mahotsav Programme on March 13, 2021

दैनिक भास्कर
चरखी दादरी भास्कर 14-03-2021

ब्रिटिश सरकार से आजादी के पीछे असंख्य बलिदानों का इतिहासः वर्मा

आजादी का अमृत महोत्सव के तहत विशेष कार्यक्रम का आयोजन

भास्कर न्यूज़ | चरखी दादरी

बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग द्वारा भारत सरकार की मुहिम आजादी का अमृत महोत्सव के तहत एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ प्राचार्य डॉ. राजकुमार वर्मा ने किया। उन्होंने कहा कि हमें ब्रिटिश सरकार से जो आजादी मिली है, उसके पीछे अनगिनत बलिदानों का इतिहास है।

कार्यक्रम में मुख्य विस्तार व्याख्यान देते हुए इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने स्मरण करवाया कि 12 मार्च 1930 को जब महात्मा गांधी ने दांडी मार्च प्रारंभ किया था, तब ब्रिटिश सरकार को यह अहसास भी है नहीं था कि यह उनका भारत से निष्क्रमण का मार्च बनेगा। परंतु यह आंदोलन जन आंदोलन बन गया और अब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आह्वान पर पुनः इस आंदोलन को स्मरण किया जा रहा है। भारत की आजादी के आंदोलन में असंख्य और कई गुमनाम देशभक्तों ने अपनी कुर्बानी देकर ब्रिटिश सरकार की दो शताब्दियों की हुकूमत को नेस्तनाबूद कर दिया था। उन्हें हमें हर समय याद रखना है। इस अवसर पर डॉ. अनिता रानी, जितेंद्र, डॉ. नरेंद्र सिंह, डॉ. अजय कुमार, डॉ. राजपाल सिंह आदि उपस्थित रहे।

गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय आजादी का अमृत महोत्सव के दौरान कार्यक्रम में मौजूद विद्यार्थी और स्टाफ सदस्य।

2. 23 March 2021: Saheedi Diwas

राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़(झज्जर)

स्नातकोत्तर इतिहास विभाग

"आजादी का अमृत महोत्सव" के उपलक्ष्य में वेबिनार का आयोजन

दिनांक : मंगलवार , 23 मार्च , 2021 समय: दोपहर 12.00 बजे

विषय: आजादी के मतवाले- भगतसिंह ,राजगुरु, सुखदेव: एक ऐतिहासिक अवलोकन

click this link:
https://meet.google.com/hxz-jfjh-jeh
Or open Meet and enter this code: hxz-jfjh-jeh

ा सांगवान, अशोक वर्मा, बलबीर वर्मा

संवाद अमर उजाला, चरखी दादरी 24.3.21

पूर्वजों के देशभक्ति भरे कार्यों से भगत सिंह ने ली प्रेरणा : कर्मवीर

चरखी दादरी। गांव बिरोहड़ स्थित राजकीय महाविद्यालय में इतिहास विभाग के तत्वावधान में शहीदी दिवस के उपलक्ष्य में मंगलवार को वेबिनार का आयोजन किया गया। वेबिनार का मुख्य विषय आजादी के मतवाले शहीद भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव एक ऐतिहासिक अवलोकन रहा।

कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि 23 मार्च 1931 को केवल तीन देशभक्तों ने फांसी के फंदे को चूमा ही नहीं था, बल्कि अंग्रेजी हुकूमत के ताबूत में कीलें ठोकी थी। हम उनके दिखाए मार्ग पर चलकर देश सेवा करनी चाहिए। मुख्य अतिथि डॉ. कर्मवीर ने कहा कि भगत सिंह जैसे क्रांतिकारी व्यक्तित्व के निर्माण के पीछे उनकी पूर्वजों के देशभक्ति भरे कार्य थे, जिनसे भगत सिंह ने प्रेरणा ली।

इस मौके पर राजकीय महिला महाविद्यालय कुलाना के एसोसिएट प्रोफेसर राजेश कुमार, प्राचार्य डॉ. राजकुमार वर्मा, सवीन, जितेंद्र, डॉ. अनीता रानी, डॉ. अजय कुमार, अजय सिंह, डॉ. महेंद्र गोस्वामी आदि उपस्थित रहे। संवाद

चरखी दादरी भास्कर 24-03-2021

अंग्रेजों को भारत छोड़ने पर मजबूर किया : चरखी दादरी में गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में अमृत महोत्सव श्रृंखला के इतिहास विभाग के तत्वावधान में शहीदी दिवस के उपलक्ष्य में आजादी के मतवाले-शहीद भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव : एक ऐतिहासिक अवलोकन विषय पर वेबिनार का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने वेबिनार का विषय प्रवर्तन किया और कहा कि 23 मार्च 1931 को केवल तीन देशभक्तों ने फांसी के फंदे को चूमा ही नहीं था बल्कि अंग्रेजी हुकूमत के ताबूत में कीलें ठोकी थी, ये इन देशभक्तों के बलिदान का असर था कि जिसने अंग्रेजों को भारत छोड़ने के लिये मजबूर कर दिया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सहायक प्रोफेसर डॉ. कर्मवीर यादव रहे। उन्होंने कहा कि भगत सिंह जैसे क्रांतिकारी व्यक्तित्व का निर्माण के पीछे उनकी पूर्वजों के देशभक्ति भरे कारनामे थे, जिनसे भगतसिंह ने प्रेरणा ली।

3. Organised special Extension Lectures on Babu Jagjiwan Ram Jayanti on 05.04.2021 in Aazadi ka Amrit Mhostsav Programme: Main Lecture was given by Dr. Amardeep.

है। विजेता पहलवानों को हरियाणा कबड्डी एसोसिएशन ... कलकल, सुरेंद्र, आनंद पहलवान, ... नरवाल, सुरेंद्र, कृष्णा देवी आदि उपस्थित थे। संवाद

अमर उजाला, चरखी दादरी 06.04.21

बाबू जगजीवन राम की जयंती पर करवाया व्याख्यान

डॉ. अमरदीप बोले- सामाजिक परिवर्तन के पुरोधा थे बाबू जगजीवन राम

संवाद न्यूज एजेंसी

चरखी दादरी। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में बाबू जगजीवन राम की 114वीं जयंती पर विस्तार व्याख्यान किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने बताया कि बाबू जगजीवन राम सामाजिक परिवर्तन के पुरोधा थे। उन्होंने सामाजिक बदलाव के लिए ऑल इंडिया डिप्रेस्ड क्लास लीग की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। पंडित जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में बनी अंतरिम सरकार में श्रम मंत्री रहते हुए उन्होंने श्रमिकों के हितों के लिए विभिन्न कानून पास करवाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इतिहास के सहायक प्रोफेसर जितेंद्र ने कहा कि बाबू जगजीवन राम ने भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिए विभिन्न कदम उठाये। समारोह के अध्यक्ष एवं महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. राजकुमार वर्मा ने भी विचार रखे। इस अवसर पर सवीन, डॉ. अजय कुमार, डॉ. राजपाल सिंह व अजय सिंह आदि उपस्थित रहे।

बिरोहड़ राजकीय कॉलेज में आयोजित व्याख्यान कार्यक्रम में मौजूद प्राध्यापक।

दैनिक भास्कर

चरखी दादरी भास्कर 06-04-2021

बाबू जगजीवन राम सामाजिक परिवर्तन के पुरोधा थे : डॉ. अमरदीप

भास्कर न्यूज | चरखी दादरी

गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में बाबू जगजीवन राम की जयंती पर आयोजित विस्तार व्याख्यान में अपने विचार रखते वक्ता।

आजादी के अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में बाबू जगजीवन राम की 114वीं जयंती के अवसर पर एक विशेष विस्तार व्याख्यान समारोह किया गया।

इस कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने अपने विशेष विस्तार व्याख्यान में बताया कि बाबू जगजीवन राम सामाजिक परिवर्तन के पुरोधा थे। 1920 के दशक में जो दलित राजनीति में उभार आ रहा था। उसकी एक उपज बाबू जगजीवन राम भी थे। इन्होंने सामाजिक बदलाव के लिये ऑल इंडिया डिप्रेस्ड क्लास लीग की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। पंडित जवाहरलाल नेहरु के नेतृत्व में बनी अंतरिम सरकार में श्रम मंत्री रहते हुए श्रमिकों के हितों के लिए विभिन्न कानून पास करवाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बाबू जगजीवन उच्च कोटि के देशभक्त और स्वतंत्रता सेनानी थे। भारत को आजाद करवाने में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सहायक प्रोफेसर जितेंद्र ने अपने व्याख्यान में कहा कि बाबू जगजीवन राम भ्रष्टाचार केवल नैतिक बुराई मात्र नही बल्कि यह देश को खोखला करने वाली बुराई मानते थे। उन्होंने भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिए विभिन्न कदम उठाए। समारोह के अध्यक्ष प्राचार्य डॉ. राजकुमार वर्मा ने कहा आजादी के बाद विशेषकर 1971 के भारत पाक युद्ध में रक्षामंत्री रहते हुए सेनाओं को सफल नेतृत्व प्रदान करते हुए बांग्लादेश की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस समारोह में सवीन, डॉ. अजय कुमार, डॉ. राजपाल सिंह एवं अजय सिंह आदि उपस्थित रहे।

4. Delivered special Extension Lecture on “Dalit Consciousness and Ambedkar’s Ideology” on the occasion of 130th Birth Anniversary of Baba Saheb Bharat Ratna Dr. B. R. Ambedkar organized by Panjab University Rural Centre, Kauni, Sri Muktsar Sahib on 12.04.2021

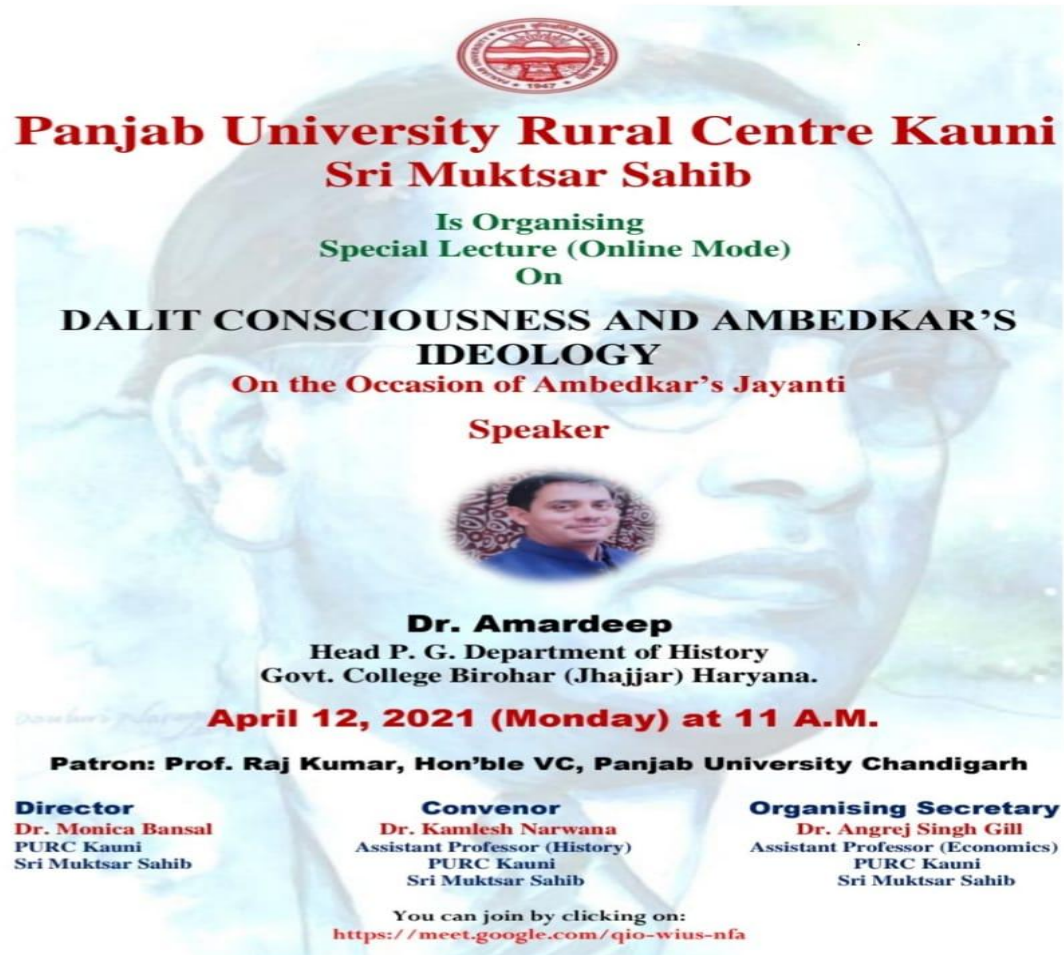

राजकीय कॉलेज में आयोजित वेबिनार में मौजूद प्राध्यापक व विद्यार्थी। संवाद

अमर उजाला, चरखी दादरी 13.4.21

राष्ट्रहित को समर्पित रहा बाबा साहेब का जीवन : अमरदीप

चरखी दादरी। बाबा साहेब डॉ. आंबेडकर की जयंती की पूर्वसंध्या पर पंजाब विश्वविद्यालय, मुक्तसर साहिब की ओर से ऑनलाइन वेबिनार का आयोजन किया गया। वेबिनार को विषय द्वारा डॉ. आंबेडकर की विचारधारा एवं दलित जागरूकता रहा। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के इतिहास विभागाध्यक्ष से मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप नेबताया कि भीमराव ने सामाजिक भेदभाव के कारण नौकरी छोड़ी और राष्ट्रहित के लिये अपने जीवन को समर्पित कर दिया। डॉ. एसएस गिल, डॉ. मोनिका, डॉ. कमलेश नरवाना ने भी विचार रखे। संवाद

5. Establishment of Students' Society: History to encourage students to enrich local history on 12.04.2021 for session 2020-21.

रोग है तो उसका इलाज जिला प्रशासन करवाने में रुचि नहीं ले रहे हैं तो उनके को पोषाहार वितरित करने की योजना

अमर उजाला, चरखी दादरी 13.4.21

क्रांतिकारियों के जीवन से प्रेरणा लें विद्यार्थी : वर्मा

राजकीय महाविद्यालय में इतिहास विषय के विद्यार्थियों की सोसायटी गठित

संवाद न्यूज एजेंसी

चरखी दादरी। गांव बिरोहड़ स्थित राजकीय महाविद्यालय में इतिहास विषय के विद्यार्थियों की सोसायटी गठित की गई।

इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने बताया कि सोसायटी गठन का उद्देश्य इतिहास विभाग की ओर से संयोजित आजादी के अमृत महोत्सव कार्यक्रम का सुचारु रूप से क्रियान्वयन करना है। उन्होंने कहा कि आसपास के गांवों में अनेक स्वतंत्रता सेनानी और सामाजिक बदलाव के अनेक असाधारण व्यक्तित्व हैं, परंतु मुख्यधारा के इतिहास पर अधिक जोर देने के कारण उनको इतिहास में वास्तविक स्थान नहीं मिल पता है। प्राचार्य डॉ. राज कुमार वर्मा ने कहा कि विद्यार्थी क्रांतिकारियों एवं स्वतंत्रता सेनानियों के जीवन से प्रेरणा लें और जीवन को राष्ट्रहित में समर्पित करने का भाव पैदा करें। इस अवसर पर डॉ. अनिता रानी, सवीन, जितेंद्र, डॉ. अजय कुमार, अजय सिंह, डॉ. राजपाल सिंह आदि उपस्थित रहे।

राजकीय कॉलेज में आयोजित बैठक में मौजूद प्राध्यापक व विद्यार्थी। संवाद

राष्ट्रहित को समर्पित रहा बाबा साहेब का जीवन : अमरदीप

चरखी दादरी। बाबा साहेब डॉ. आंबेडकर की जयंती की पूर्वसंध्या पर पंजाब विश्वविद्यालय, मुक्तसर साहिब की ओर से ऑनलाइन वेबिनार का आयोजन किया गया। वेबिनार को विषय द्वारा डॉ. आंबेडकर की विचारधारा एवं दलित जागरूकता रहा। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के इतिहास विभागाध्यक्ष से मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप नेबताया कि भीमराव ने सामाजिक भेदभाव के कारण नौकरी छोड़ी और राष्ट्रहित के लिये अपने जीवन को समर्पित कर दिया। डॉ. एसएस गिल, डॉ. मोनिका, डॉ. कमलेश नरवाना ने भी विचार रखे। संवाद

दैनिक भास्कर

चरखी दादरी भास्कर 13-04-2021

स्थानीय इतिहास को समृद्ध किया जाने का किया जाएगा प्रयास : डॉ. अमरदीप

विद्यार्थियों की इतिहास विषय पर सोसाइटी का गठन एवं बैठक आयोजित

भास्कर न्यूज़ | चरखी दादरी

गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में स्नातकोत्तर इतिहास विभाग द्वारा विद्यार्थियों की इतिहास विषय सोसाइटी का गठन एवं बैठक की गई।

इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने बताया कि इस सोसाइटी का गठन का उद्देश्य इतिहास विभाग द्वारा संयोजित आजादी के अमृत महोत्सव कार्यक्रम का सुचारू संचलन है और इसके साथ साथ क्षेत्रीय इतिहास की खोज करना इसका अहम पहलु है। डॉ. अमरदीप ने कहा कि हमारे आसपास गांवों में अनेक स्वतंत्रता सेनानी और सामाजिक बदलाव के महान व्यक्तित्व भरे पड़े है, परंतु सामन्यतय मुख्यधारा के इतिहास पर अधिक जोर देने के कारण उनको इतिहास में उनका वास्तविक स्थान नहीं मिल पता है। इस सोसाइटी के माध्यम से विद्यार्थियों को ऐसी सख्सियतों को खोज कर उनको पहचान दिलाने का कार्य करके स्थानीय इतिहास को समृद्ध किया जाने का प्रयास किया जाएगा। प्राचार्य डॉ. राज कुमार वर्मा ने कहा कि हर विद्यार्थी इन 75 सप्ताह के दौरान क्रांतिकारियों एवं स्वतंत्रता सेनानियों के जीवन से प्रेरणा ले और जीवन को राष्ट्रहित में समर्पित करने का भाव पैदा करे। इस सिलसिले में बाबा साहेब डॉ. भीमराव आंबेडकर की जयंती मनाने एवं डॉ. यशवीर सिंह, प्राचार्य, जनता महाविद्यालय को मुख्य वक्ता के रूप में आमंत्रित करने का निर्णय लिया गया। इस अवसर पर डॉ. अनीता रानी, सवीन, जितेंद्र, डॉ अजय कुमार, अजय सिंह, डॉ. राजपाल सिंह इत्यादि उपस्थित रहे।

गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय इतिहास विभाग द्वारा आयोजित बैठक में मौजूद कॉलेज स्टॉफ व विद्यार्थी।

6. 13 April 2021: बाबा साहेब भारत रत्न डॉ भीमराव अंबेडकर जी की जयंती एवं जलियांवाला बाग हत्याकांड की यादगार में एक वेबिनार का आयोजन in celebration of 75th Year of Independence in the Aazadi Ka Amrit Mahotsav Programme. दिनांक : मंगलवार , 13 अप्रैल , 2021 समय: प्रातः 11.45 बजे
मुख्य वक्ता: डॉ यशवीर सिंह, प्राचार्य, जनता महाविद्यालय, चरखी दादरी

दैनिक भास्कर चरखी दादरी भास्कर 14-04-2021

डॉ. अंबेडकर के विचार आज भी प्रासंगिक हैं : डॉ. राजकुमार वर्मा

चरखी दादरी | गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर की 130वीं जयंती एवं जलियांवाला बाग नरसंहार की यादगार में एक विशेष विस्तार व्याख्यान समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि डॉ. अंबेडकर एक महान एवं बहुमुखी व्यक्तित्व के स्वामी थे। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डॉ. यशवीर सिंह, प्राचार्य, जनता महाविद्यालय ने कहा कि बाबा साहेब एक महान राष्ट्रवादी थे। उन्होंने डॉ. अंबेडकर के जीवन एवं संघर्ष पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा कि डॉ. अंबेडकर किसी एक जाति विशेष के नेता नही थे, जैसा आजकल अधिकतर माना जाता है, परंतु डॉ. अंबेडकर के बारे में यह केवल एकपक्षीय आंकलन है। जबकि वास्तविकता यह है कि उन्होंने समाज के प्रत्येक पक्ष-समुदाय इत्यादि के उत्थान के जीवन पर्यन्त कार्य किया। उन्होंने सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक आजादी के लिए आजीवन कार्य किया। आज पूरे समाज एवं खासकर युवा वर्ग को उनके विचारों को अपने जीवन में उतारने का आह्वान किया। प्राचार्य डॉ. राजकुमार वर्मा ने कहा कि बाबा साहेब ने हमेशा मानव मात्र के नैसर्गिक मानव अधिकारों के स्थापना के लिए संघर्ष किया था। डॉ. अंबेडकर के विचार भी आज भी प्रासंगिक है। डॉ. अमरदीप ने अपने व्यक्तव्य में कहा कि जलियांवाला बाग नरसंहार ने ब्रिटिश हुकूमत का काला चेहरा पूरी दुनिया के सामने उजागर किया। यहां डॉ. अनीता रानी, सुनीता बेनीवाल, डॉ. सुरेंद्र सिंह, निशा रानी, जितेंद्र, सवीन, पवन कुमार, ओमबीर, पवित्रा देवी, रश्मि, डॉ. अजय कुमार, डॉ. राजपाल सिंह एवं अजय सिंह, प्रदीप कुमार आदि उपस्थित रहे।

7. 6 May 2021: National Webinar organised in Aazadi Ka Amrit Mahotsav Programme on “Swami Acchutanand and His Contribution in National Awakening in Colonial Period” (May 6, 2021 (Thursday) at 12:00P.M)
Speaker: Sh. Guru Prasad Madan
Biographer of Swami Acchutanand, Renowned Poet & Social Reformer
Prayagraj, Uttar Pradesh, May 6, 2021 (Thursday) at 12:00P.M.

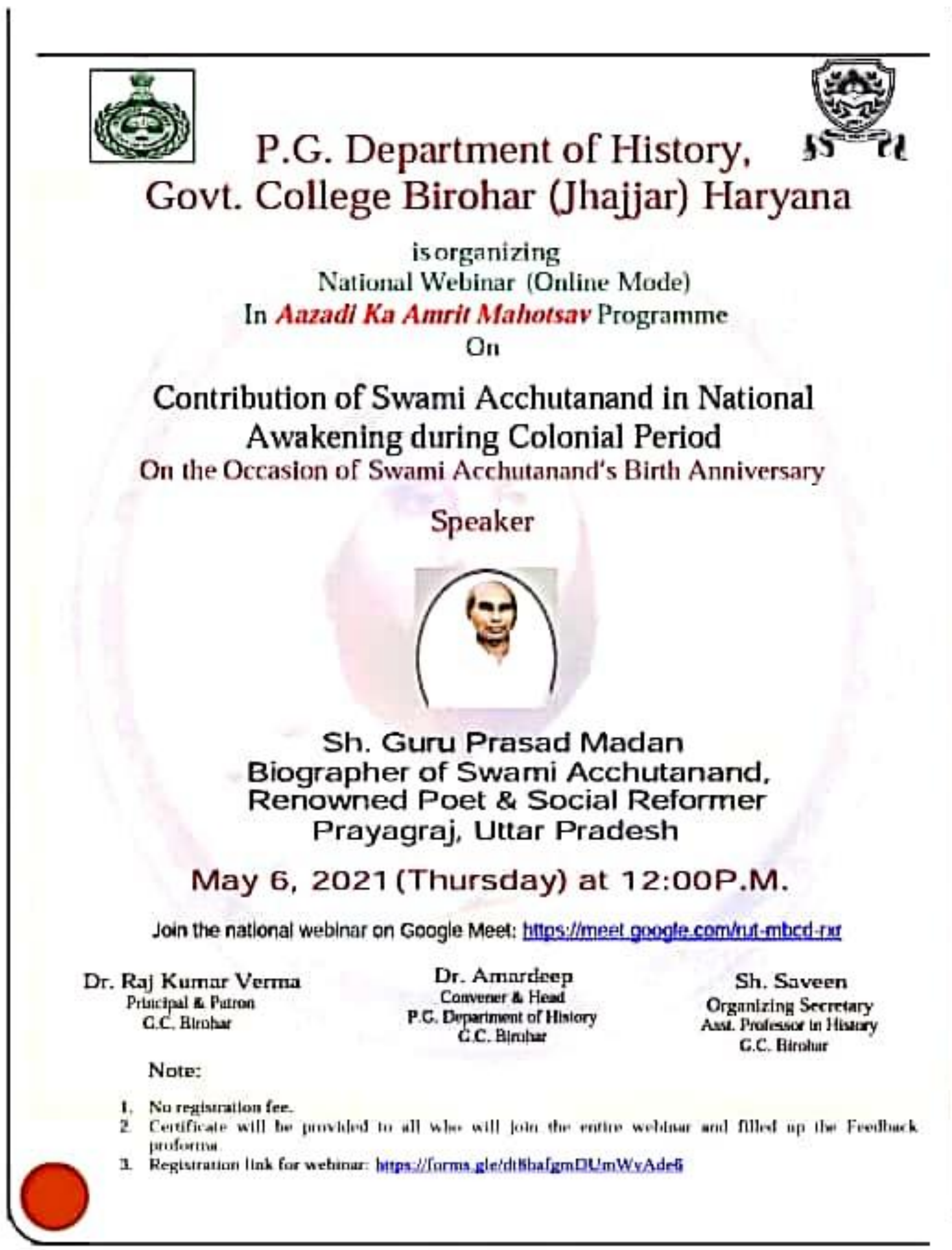

चरखी दादरी भास्कर 07-05-2021

स्वामी अछुतानंद हरिहर ने राष्ट्रीय आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थीः गुरु प्रसाद मदन

चरखी दादरी| आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गुरुवार को गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में स्वामी अछुतानंद हरिहर की 142वीं जयंती के अवसर पर राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने बताया कि औपनिवेशिक काल में राष्ट्रीय जागरूकता फैलाने में स्वामी अछुतानंद का योगदान विषय पर गुरु प्रसाद मदन, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश द्वारा अपना विशेष व्याख्यान दिया गया। गुरु प्रसाद मदन स्वामी अछुतानंद के जीवनीकार एवं वरिष्ट कवि, साहित्यकार एवं समाज सुधारक है। गुरु प्रसाद मदन ने बताया कि स्वामी अछुतानंद ने राष्ट्रीय आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उन्होंने ने केवल भारतीय जनमानस की मुक्ति के लिए संघर्ष किया अपितु वैश्विक स्तर चल रही गुलामी की भी आलोचना की।

का भी अपना इलाज करवाने में दिक्कत आ रहा है। संवाद

अमर उजाला, चरखी दादरी 07.05.21

महाविद्यालय में राष्ट्रीय वेबिनार आयोजित

चरखी दादरी। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के इतिहास विभाग के तत्वावधान में स्वामी अछुतानंद हरिहर की 142 वीं जयंती के अवसर पर राष्ट्रीय वेबिनार आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने बताया कि स्वामी अछुतानंद ने राष्ट्रीय आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उन्होंने न केवल भारतीय जनमानस की मुक्ति के लिए संघर्ष किया अपितु वैश्विक स्तर चल रही गुलामी की भी आलोचना की। स्वामी अछुतानंद ने 1922 में आदि हिंदू आंदोलन की नींव रखी और अनुसूचित जाति वर्ग की दयनीय स्थिति को सुधारने एवं उन्हें राजनीतिक रूप से संगठित करने का कार्य किया। राष्ट्रीयता की भावना जगाने एवं हिंदी के लिए अनेक आंदोलन ने किए। उन्होंने कहा कि राष्ट्र के निर्माण और साम्राज्यवाद के खिलाफ संघर्ष में हर व्यक्ति का सहयोग अनिवार्य है। वेबिनार में प्रोफसर महाराम, प्रोफेसर संतोष, डॉ. अजय कुमार, रतनेश चौधरी नागपुर, रीवा मध्य प्रदेश, डॉ. दलजीत कुमार, कार्यवाहक प्राचार्य रोहताश सिंह, नरेंद्र सिंह, डॉ. अजित सिंह, डॉ. पुष्पा, प्राचार्य यशवीर सिंह ने विचार रखे। संवाद

8. 10 May 2021: special webinar/programme and Declamation Competition on 164th Anniversary of Commencement of Great Revolt of 1857 in celebration of 75th Year of Independence in the Aazadi Ka Amrit Mahotsav Programme.

आज 10 मई 2021 को आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में 1857 की क्रांति की 164 वीं वर्षगांठ पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। भाषण प्रतियोगिता में एम्ए इतिहास द्वितीय वर्ष के हितेश ने प्रथम स्थान और मोहित को द्वितीय स्थान प्राप्त हुवा वही तृतीय स्थान पर एम्ए इतिहास प्रथम वर्ष की प्रियन्का कौशिक रही

भाषण प्रतियोगिता में एमए इतिहास का हितेश प्रथम

चरखी दादरी (संवाद)। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के इतिहास विभाग के तत्वावधान में 1857 की क्रांति की 164 वीं वर्षगांठ पर विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस दौरान आयोजित भाषण प्रतियोगिता में हितेश प्रथम रहा। कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने बताया कि 1857 की क्रांति का भारतीय राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में अभूतपूर्व योगदान था। डॉ. अनिता रानी, एसोसिएट प्रोफेसर राजनीति विज्ञान ने अपने व्याख्यान में विशेष रूप से हरियाणा में 1857 की क्रांति के प्रसार के बारे में जानकारी दी। इतिहास के सहायक प्राध्यापक सवीन ने कहा कि मेरठ छावनी से यह क्रांति आग की तरह भारत के विभिन्न राज्यों एवं शहरों में फैली और जनक्रांति का स्वरूप धारण कर लिया।

प्रतियोगिता में एमए इतिहास द्वितीय वर्ष के छात्र हितेश ने प्रथम स्थान और मोहित को द्वितीय स्थान मिला। वहीं तृतीय स्थान पर एमए इतिहास प्रथम वर्ष की प्रियंका कौशिक रही।

अमर उजाला, चरखी दादरी 11.5.21

9. 15 May 2021: महान क्रांतिकारी सुखदेव जी की जयन्ती पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन in celebration of 75th Year of Independence in the Aazadi Ka Amrit Mahotsav Programme
आज इतिहास विभाग के तत्वाधान में महान क्रांतिकारी सुखदेव जी की जयन्ती पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है।

दैनिक भास्कर चरखी दादरी भास्कर 16-05-2021

शहीदों की बदौलत मिल पाई आजादी : डॉ. रानी

भास्कर न्यूज | चरखी दादरी

गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में महान क्रांतिकारी सुखदेव की 114वीं जयंती पर एक विशेष वेबिनार का आयोजन किया गया। इस वेबिनार के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने व्याख्यान में बताया कि सुखदेव का जन्म 15 मई 1907 में लुधियाना में हुआ था। सुखदेव ने भारतीय राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में अभूतपूर्व एवं क्रांतिकारी योगदान दिया था। 1921 में नेशनल कॉलेज में भगत सिंह व अन्य क्रांतिकारियों से मिलकर सुखदेव ने अंग्रेजों को भारत से बाहर निकालने के लिए बहुत प्रयास किए। सांडर्स की हत्या करके सुखदेव और अन्य क्रांतिकारियों ने यह बता दिया था अब भारतीय उनके जुल्म को नहीं सहेंगे। इस घटना से अंग्रेजी सरकार बौखला गई थी और बाद में लाहौर षड़यंत्र मुकदमे में इनको गिरफ्तार कर लिया गया। एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. अनीता रानी ने अपने व्याख्यान में कहा कि हमें भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के सभी क्रांतिकारियों से प्रेरणा लेनी चाहिए और इनके बलिदानों की बदौलत ही हमें आजादी मिल पाई। सवीन और जितेन्द्र, सहायक प्राध्यापक ने कहा कि सुखदेव ने जेल में हो रहे दुर्व्यवहार की खिलाफ भूख हड़ताल की और महात्मा गांधी को खुला पत्र लिखकर बताया कि क्रांतिकारियों से खूब सोच विचार कर केंद्रीय असेंबली में बम फेंका और उन्होंने किसी को मारने के लिए नही बल्कि बहरों को सुनाने के लिए यह कदम उठाया था। इस अवसर पर डॉ. अजय कुमार, डॉ. राजपाल सिंह ने सुखदेव के बलिदान को अविस्मर्णीय बताया। एमए इतिहास के मोहित और प्रियंका ने सुखदेव के जीवन को युवाओं के प्रेरणादायक बताया और युवाओं को उनके बताये हुए आदर्शों पर चलने के लिए आह्वान किया।

शहीद सुखदेव के जीवन प्रसंगों को याद किया

अमर उजाला, चरखी दादरी 16.5.21

चरखी दादरी। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के इतिहास विभाग के तत्वावधान में महान क्रांतिकारी सुखदेव की 114वीं जयंती पर वेबिनार आयोजित किया गया।

वेबिनार के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने अपने व्याख्यान में बताया कि सुखदेव का जन्म 15 मई 1907 में लुधियाना में हुआ था। सुखदेव ने भारतीय राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में अभूतपूर्व एवं क्रांतिकारी योगदान दिया था। सांडर्स की हत्या करके सुखदेव और अन्य क्रांतिकारियों ने यह बता दिया था कि अब भारतीय उनके जुल्म को नहीं सहेंगे। डॉ. अनिता रमानी, एसोसिएट प्रोफेसर राजनीति विज्ञान ने कहा कि हमें भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के सभी क्रांतिकारियों से प्रेरणा लेनी चाहिए। इस दौरान डॉ. अजय कुमार, डॉ. राजपाल सिंह ने भी सुखदेव के बलिदान को अविस्मरणीय बताया। संवाद

10. Delivered Ist Krantiveer Baburao Shedmake Memorial Lecture on “Collection and Usage of Primary Sources in Historical Studies” organised by Post Graduate Teaching Department of History, Gondwana University, Gadchiroli, Maharashtra on 24.05.2021.

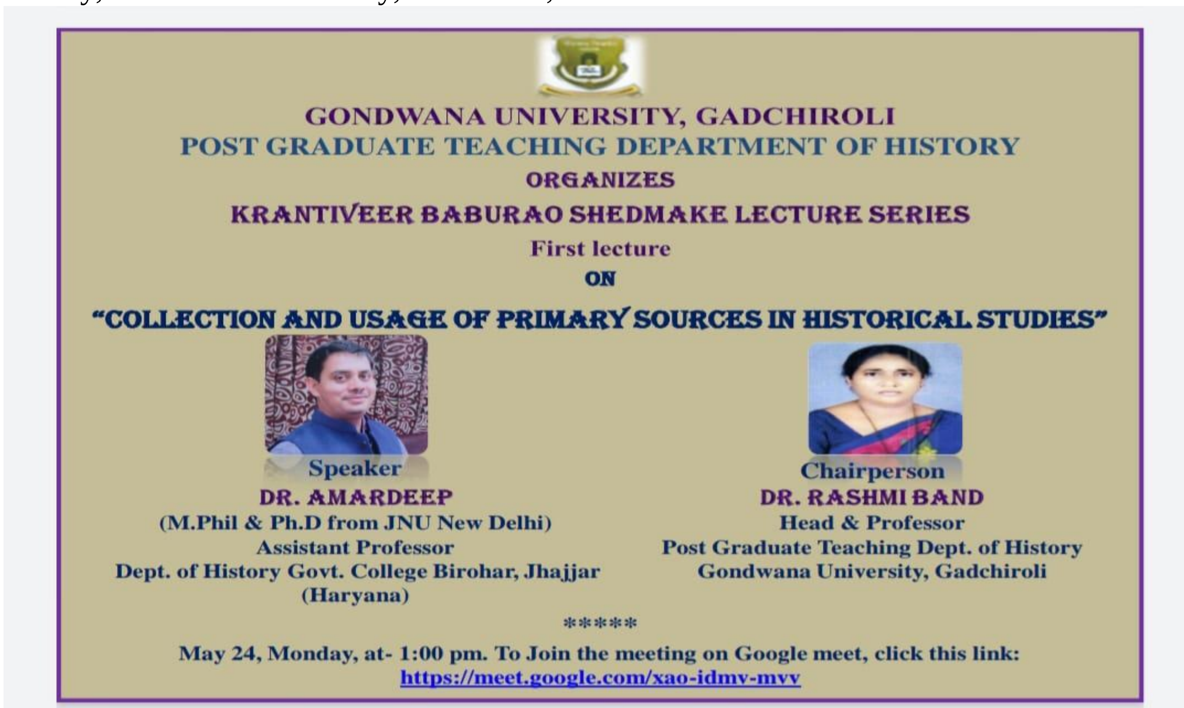

दूसर रामनगर जलघर म दो वाटर टक रहा ह

अमर उजाला, चरखी दादरी

शोध छात्र निष्पक्ष इतिहास लेखन और विस्मृत लोगों के इतिहास का सृजन करें : रश्मि

चरखी दादरी। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने गोंडवाना विश्वविद्यालय महाराष्ट्र में इतिहास विभाग के तत्वावधान में आयोजित वेबिनार में व्याख्यान दिया। कार्यक्रम के अध्यक्षीय भाषण में प्रो. रश्मि इतिहास विभागाध्यक्ष गोंडवाना विश्वविद्यालय ने कहा कि वर्तमान में शोध छात्रों का सबसे पहला कार्य निष्पक्ष इतिहास लेखन करना और विस्मृत लोगों के इतिहास के सृजन का है।

डॉ. संतोष ने बताया कि 1857 की क्रांति में अंग्रेजों को नाको चने चबवाने वाले क्रांतिवीर बाबूराव शेडमाके की स्मृति में मेमोरियल लेक्चर सीरीज में डॉ. अमरदीप ने इतिहास में प्राथमिक स्रोतों का संग्रह और इनका उपयोग विषय पर व्याख्यान दिया। डॉ. अमरदीप ने कहा कि इतिहास में सबसे अधिक महत्व प्राथमिक स्रोतों का रहता है, जो शोध की गुणवता को निर्धारित करता है। आज जिस प्रकार आजादी का अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है, उस दिशा में महान क्रांतिवीर बाबूराव शेडमाके जैसे असंख्य गुमनाम योद्धाओं का योगदान पुनर्जीवित करने का समय आ गया है। इसलिए अब शोध छात्रों को इस दिशा में अपना ध्यान देना चाहिए। डॉ. अमरदीप ने इतिहास के प्राथमिक स्रोतों का संग्रह और उनका संरक्षण करने का आह्वान किया। संवाद

हरियाणा 25.5.2021 (Page.4)

गोंडवाना विद्यापीठात क्रांतीवीर बाबुराव सेडमाके व्याख्यानमाला

देशोन्नति समाचार पत्र, महाराष्ट्र 29.5.2021

देशोन्नती वृत्तसंकलन...

गडचिरोली ▪ स्थानीक गोंडवाना विद्यापीठाच्या पदव्युत्तर इतिहास विभागाद्वारे २४ मे रोजी क्रांतीवीर बाबुराव सेडमाके व्याख्यानमालेचे आभासी पध्दतीने उद्घाटन करण्यात आले.

पहिले व्याख्यान 'ऐतिहासिक संशोधनातील प्राथमिक साधनांचे संकलन व वापर' या विषयावर हरीयाणा राज्यातील बिरहोर येथील शासकीय महाविद्यालयातील डॉ. अमरदीप यांनी मार्गदर्शन केले.

डॉ. अमरदीप यांनी मार्गदर्शन करतांना म्हटले की, इतिहासात प्राथमिक साधनांना सर्वाधिक महत्व आहे. प्राथमिक साधणे संशोधनाची गुणवत्ता निर्धारीत करीत असतात. संशोधकांनी लिखीत, अलिखीत व मौख्यिक प्राथमिक साधनांच्या माध्यमातून वस्तूनिष्ट स्वरूपात संशोधन करावे, असे प्रतिपादन त्यांनी केले. कार्यक्रमाचे अध्यक्ष इतिहास विभाग प्रमुख डॉ. रश्मि यंड यांनी वर्तमानकाळात संशोधक विद्यार्थ्यांनी निष्पक्ष पध्दतीने इतिहास लेखन करावे व विस्मृतीत गेलेल्या लोकांचा इतिहास प्रकाशात आणावे असे आवाहन त्यांनी केले. कार्यक्रमाचे संचालन डॉ. संतोष सुरडकर तर आभार डॉ. नंदकिशोर माने यांनी मानले. कार्यक्रमाला मोठया संख्येने संशोधक विद्यार्थी व प्राध्यापक आभासी पद्धतीने उपस्थित होते.

11. Organized special extension lecture on "Development of Law in Post Independence Era" by Dr. Shallu Aggarwal, Asst. Professor, Institute of Law, KUK on 10.06.2021 in celebration of 75th Year of Independence in the Aazadi Ka Amrit Mahotsav Programme

अमर उजाला चरखी दादरी 11.6.2021

अधिकारों और कर्तव्यों के बारे में जागरूकता अनिवार्य : अमरदीप

चरखी दादरी (संवाद)। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के इतिहास विभाग एवं कानूनी साक्षरता सेल के संयुक्त तत्वावधान में आजादी के पश्चात कानून का विकास विषय पर विस्तार व्याख्यान आयोजित किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि आज के दौर में हमें कानून की संपूर्ण जानकारी एवं अपने अधिकारों व मौलिक कर्तव्यों के बारे में जागरूकता अनिवार्य रूप से होनी चाहिए। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के कानून विभाग से डॉ. शालू अग्रवाल ने बताया कि आजादी के पश्चात सबसे बड़ा बदलाव सत्ता के स्रोत में आया। मौलिक अधिकार अनुच्छेद 14 से 19 और 21 ने भारतीय जनमानस के लिए वास्तविक आजादी की नींव रखी। कार्यक्रम में डॉ. सुरेंद्र सिंह, दलजीत कुमार, डॉ. प्रदीप कुंडू, सवीन, जितेंद्र, डॉ. अजय कुमार, डॉ. राजपाल सिंह और अजय सिंह ने भाग लिया।

मौलिक अधिकारों के बारे में जागरूकता अनिवार्य रूप से होनी चाहिएः डॉ. अमरदीप

कानूनी साक्षरता सेल के तत्वावधान में विस्तार व्याख्यान का आयोजन

भास्कर न्यूज | चरखी दादरी

गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं कानूनी साक्षरता सेल के तत्वावधान में विस्तार व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि आज के दौर में हमें कानून की सम्पूर्ण जानकारी एवं अपने मौलिक अधिकारों तथा मौलिक कर्तव्यों के बारे में जागरूकता अनिवार्य रूप से होनी चाहिए।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के कानून विभाग से डॉ. शाल्लू अग्रवाल ने कानून ने अपने विस्तार व्याख्यान में बताया कि आजादी के पश्चात सबसे बड़ा बदलाव सत्ता के स्त्रोत में आया जो अब ब्रिटिश महारानी नही बल्कि आम भारतीय जनता हो गया था।

मौलिक अधिकार विशेषकर अनुच्छेद 14 से 19 और 21 ने भारतीय जनमानस के लिए वास्तविक आजादी की नींव रखी। डॉ. अग्रवाल ने सर्वोच्चय न्यायालय द्वारा कानून के विकास में निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डालते हुए कहा कि मेनका गांधी बनाम भारत सरकार मामले में न्यायधीश भगवती द्वारा जीवन के अधिकार की महत्वपूर्ण व्याख्या करते हुए मानव के पशुवत अस्तित्व की बजाय गौरवपूर्ण, मर्यादित जीवन जीने का अधिकारी माना। डॉ. अमरदीप ने कहा कि भारतीय संविधान और इसके पश्चात कानून के विकास ने हर भारतीय के जीवन को ब्रिटिश गुलामी के अंधकारपूर्ण जीवन से निकालकर एक नए जोश एवं उर्जा के प्रकाश से परिपूर्ण कर दिया है। इस कार्यक्रम में डॉ. सुरेन्द्र सिंह, दलजीत कुमार, डॉ. प्रदीप कुंडू, सवीन, जितेंद्र, डॉ. अजय कुमार, डॉ. राजपाल सिंह और अजय सिंह आदि प्राध्यापक उपस्थित रहे।

दैनिक भास्कर

झज्जर भास्कर 11-06-2021

आजादी के बाद कानून के विकास विषय पर विस्तार व्याख्यान दिया

राजकीय कालेज में ऑनलाइन विचार विमर्श करते हुए वक्ता।

भास्कर न्यूज़ | साल्हावास

आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं क़ानूनी साक्षरता सेल के संयुक्त तत्वावधान में आजादी के पश्चात कानून का विकास विषय पर एक विशेष विस्तार व्याख्यान का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि आज के दौर में हमें कानून की सम्पूर्ण जानकारी एवं अपने मौलिक अधिकारों तथा मौलिक कर्तव्यों के बारे में जागरूकता अनिवार्य रूप से होनी चाहिए। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता कुरुक्षेत्र विश्विद्यालय के कानून विभाग से डॉ. शाल्लू अग्रवाल ने बताया कि आजादी के पश्चात सबसे बड़ा बदलाव सत्ता के स्त्रोत में आया जो अब ब्रिटिश महारानी नही बल्कि आम भारतीय जनता हो गया था। मौलिक अधिकार विशेषकर अनुच्छेद 14 से 19 और 21 ने भारतीय जनमानस के लिए वास्तविक आजादी की नींव रखी।

डॉ. अग्रवाल ने सर्वोच्चय न्यायालय द्वारा कानून के विकास में निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डालते हुए कहा कि मेनका गांधी बनाम भारत सरकार मामले में न्यायधीश भगवती द्वारा जीवन के अधिकार की महत्वपूर्ण व्याख्या करते हुए मानव के पशुवत अस्तित्व की बजाय गौरवपूर्ण, मर्यादित जीवन जीने का अधिकारी माना। इस कार्यक्रम में डॉ. सुरेन्द्र सिंह, दलजीत कुमार, डॉ. प्रदीप कुंडू, सवीन, जितेन्द्र, डॉ. अजय कुमार, डॉ. राजपाल सिंह और अजय सिंह प्राध्यापक उपस्थित रहे।

12. National webinar was organised on the occasion of International day of Yoga on 19.06.2021 in the collaboration of P.G. Dept. of History, Youth Red Cross, Dept of Physical Education and NSS Unit of the College in celebration of 75th Year of Independence in the Aazadi Ka Amrit Mahotsav Programme.

Keynote Speaker: Smt. Neelam, Research Associate, Dept. of Physical Education, Banasthli University, Banasthali, Rajasthan (Topic: Importance of Yoga in Present Contest)

Special Lecture: Sh. Daljeet Kumar, Asst. Professor & Head, Dept. of History, G.C. Israna (Panipat)

(Topic: Importance of Yoga in Historical Contest)

Special Lecture: Dr. Amardeep, Asst. Professor & Head, P.G. Dept. of History, G.C. Birohar (Jhajjar)

(Topic: Importance of Yoga in Historical Contest: Special Reference to Revolutionary Movement)

दैनिक भास्कर

झज्जर भास्कर 20-06-2021

योग तन व मन से स्वस्थ बनाता है: नीलम

साल्हावास | गांव बिरोहड़ स्थित राजकीय कॉलेज में स्नातकोत्तर इतिहास विभाग, यूथ रेडक्रॉस, राष्ट्रीय सेवा योजना यूनिट और शारीरिक शिक्षा विभाग ने योग दिवस पर राष्ट्रीय वेबिनार की।

इसमें राजस्थान के बनस्थली विद्यापीठ की रिसर्च एसोसिएट, शारीरिक शिक्षा विभाग से नीलम ने कहा कि योग मानव को तन व मन से स्वस्थ बनाता है। ग्रीनमेन, बेस्ट पर्यावरणविद् और बेस्ट टीचर अवार्डों से सम्मानित इसराना

के राजकीय कॉलेज से प्रोफेसर दलजीत कुमार ने कहा कि योग के बारे में हमें सिन्धु सभ्यता से लेकर वेदों में योग के बारे में जानकारी मिलती है। शिक्षक रत्न और बेस्ट टीचर अवार्डों से सम्मानित डॉ. अमरदीप, संयोजक यूथ रेडक्रॉस काउंसलर एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप, सहसंयोजक और प्रोफेसर शारीरिक शिक्षा विभाग से डॉ. प्रदीप कुंडू व वेबिनार के संरक्षक व कॉलेज प्राचार्य डॉ. राजकुमार वर्मा व सहसंयोजक एवं राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम प्रभारी प्रोफेसर निशा रानी ने भी विचार रखे। इस मौके पर डॉ. अनीता फौगाट, डॉ. नरेंद्र सिंह, डॉ. अजय कुमार, हितेश, मोहित, नवीन कुमार, कविता आदि उपस्थित रहे।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन

मनुष्य को तन और मन से स्वस्थ बनाता है योग

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में स्नातकोत्तर इतिहास विभाग, यूथ रेड क्रॉस, राष्ट्रीय सेवा योजना यूनिट व शारीरिक शिक्षा विभाग के संयुक्त तत्वाधान में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। आजादी के अमृत महोत्सव कार्यक्रम के अंतर्गत आयोजित इस वेबिनार के संयोजक डॉक्टर अमरदीप ने कहा कि वर्तमान समय में योग संपूर्ण सृष्टि के लिए

झज्जर। योग दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित वेबिनार में मौजूद वक्तागण व अन्य।

जीवन रक्षक की भूमिका निभा सकता है। महाविद्यालय द्वारा योग के बारे में जागरुकता फैलाने के उद्देश्य से वेबिनार का आयोजन किया गया है। वेबिनार की मुख्य वक्ता बनस्थली विद्यापीठ राजस्थान से शारीरिक शिक्षा विभाग की रिसर्च एसोसिएट नीलम ने कहा कि योग मनुष्य को तन और मन से स्वस्थ बनाता है। वर्तमान समय में हम एकाग्र नहीं हो पाते और बहुत सारे अवसाद एवं मनोविकारों से ग्रस्त रहते हैं। इन सबका निदान

■ योग मानव के लिए सकारात्मक ऊर्जा का भंडार

निरंतर योग है। योग में अदम्य उर्जा और शक्ति है जो मानव कल्याण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम प्रभारी प्रोफेसर निशा रानी ने योग को जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बताते हुए कहा कि योग मानव के लिए सकारात्मक ऊर्जा का भंडार है। इसके अलावा डॉक्टर अनीता फौगाट, डॉक्टर नरेंद्र सिंह, डॉक्टर अजय कुमार, हितेश, मोहित, नवीन कुमार, कविता आदि ने भी योग के संबंध में अपनी प्रतिक्रिया दी।

हरि भूमि झज्जर, 20 जून 2021

13. Dr. Amardeep was invited to delivered expert lecture on 6 July 2021 in National Workshop on "राष्ट्रीय आन्दोलन: विविध आयाम" organized under आजादी का अमृत महोत्सव by Department of History & Culture, Gujarat Vidhyapith, Ahmedabad from 05 July to 10July, 2021.

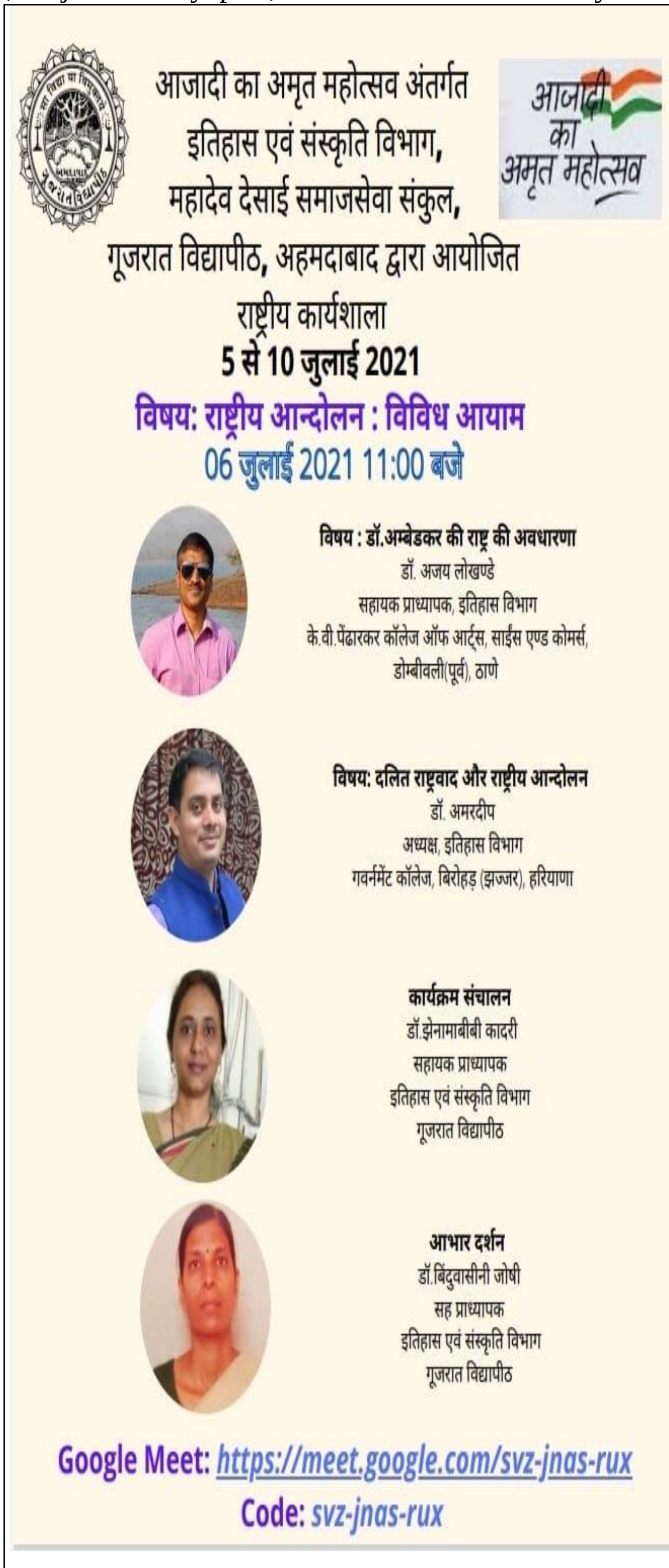

Charkhi Dadr

दैनिक जागरण हिसार, 7 जुलाई, 2021

राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में कार्यशाला में दिया व्याख्यान

जासं, चरखी दादरी : गांव बिरोहड़ स्थित राजकीय महाविद्यालय के इतिहास विभागाध्यक्ष डा. अमरदीप ने गुजरात विद्यापीठ के इतिहास एवं संस्कृति विभाग द्वारा आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला में व्याख्यान दिया।

कार्यक्रम संयोजक डा. विक्रम ने कहा कि राष्ट्रीय आंदोलन के विविध आयामों पर सात दिनों तक चलने वाली इस कार्यशाला में पूरे भारत से बुद्धिजीवियों को आमंत्रित किया गया है। कार्यशाला के दूसरे दिन डा. अमरदीप ने दलित राष्ट्रवाद और राष्ट्रीय आंदोलन विषय पर विस्तृत व्याख्यान दिया। डा. अमरदीप ने कहा एक सुदृढ एवं शक्तिशाली भारत का निर्माण का मार्ग प्रशस्त करने के लिए हर व्यक्ति को मजबूत करना होगा। डा. कन्हैया लाल नायक ने कहा कि समाज को विभाजित करने के बजाय एकजुट करना ही हमारा ध्येय होना चाहिए। डा. बिंदुवासीनी जोशी ने कहा कि डा. अमरदीप के व्याख्यान से कई शोधार्थियों को एक नई दिशा मिली है और इससे क्षेत्रीय आंदोलनों को समझने में सहायता मिलेगी। बिरोहड़ महाविद्यालय के प्राचार्य डा. राजकुमार वर्मा ने कहा कि डा. अमरदीप को इस सप्त दिवसीय कार्यशाला में मुख्य वक्ता के रूप में आमंत्रित करने पर महाविद्यालय का गौरव बढ़ा है। महाविद्यालय के स्टाफ सदस्य डा. अनीता फौगाट, डा. सुरेंद्र सिंह, सुनीता बेनीवाल, डा.. प्रदीप कुंडू, जितेंद्र, संदीप कुमार और सुरेंद्र सिंह ने भी डा. अमरदीप को बधाई दी।

अमर उजाला, चरखी दादरी 7.6.21

अमरदीप ने राष्ट्रीय कार्यशाला में किया प्रदेश का प्रतिनिधित्व

चरखी दादरी। महाविद्यालय बिरोहड़ के इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ.अमरदीप ने गुजरात विद्यापीठ अहमदाबाद के इतिहास एवं संस्कृति विभाग द्वारा आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला में व्याख्यान दिया। कार्यक्रम संयोजक डॉ. विक्रम अमरावत ने कहा कि राष्ट्रीय आंदोलन के विविध आयामों पर सात दिनों तक चलने वाली कार्यशाला में पूरे भारत से बुद्धिजीविओं को आमंत्रित किया गया है। मंगलवार को डॉ. अमरदीप ने प्रदेश का प्रतिनिधित्व करते हुए राष्ट्रवाद और राष्ट्रीय आंदोलन विषय पर शोधपरक व्याख्यान दिया। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. राजकुमार वर्मा, डॉ. अनिता रानी, संदीप कुमार ने डॉ. अमरदीप को बधाई दी है। संवाद

Department of History & Culture, Mahadev Desai Samajseva Sankul,
Gujarat Vidyapith, Ahmedabad - 380014

National Workshop on

NATIONAL MOVEMENT: DIFFERENT ASPECTS

CERTIFICATE

This is to certify that **Dr. Amardeep, Assistant Professor, P.G. Department of History, Govt. College, Birohar (Jhajjar), Haryana** has participated and delivered an expert lecture on the topic "**Dalit Nationalism and National Movement**" on 6th July 2021 in the 6-day workshop on "National Movement: Different Aspects" organized by the Dept. of History and Culture, Gujarat Vidyapith, Ahmedabad during 5 – 10 July 2021. The workshop was organized under the auspices of Azadi ka Amritmahotsav.

DR. VIKRAM SINGH AMARAWAT	DR. KANAIYALAL NAYAK	DR. KAMLESH PATEL
Program Coordinator Assistant Professor Dept. of History & Culture Gujarat Vidyapith	Head Dept. of History & Culture Gujarat Vidyapith	Coordinator M.D. Samajseva Sankul Ahemedabad

14. Dr. Amardeep worked as convener and organised a National Webinar on Great Freedom Fighter Aruna Asaf Ali on her 112th birth anniversary on 16.7.2021 under आजादी का अमृत महोत्सव programme.

Charkhi Dadr

दैनिक जागरण

17.7.21

स्वतंत्रता सेनानी अरूणा आसफ अली की जयंती मनाई

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में शुक्रवार को स्नातकोत्तर इतिहास विभाग की ओर से महान स्वतंत्रता सेनानी अरुणा आसफ अली की 112वीं जयंती पर राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। वेबीनार के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डा. अमरदीप ने बताया कि अरुणा आसफ अली भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की महिला शक्ति की जागृति का जीता जागता प्रमाण थी। उन्होंने आजादी के संघर्ष में महिलाओं की भागेदारी को सुनिश्चित किया। राष्ट्रीय वेबीनार के मुख्य वक्ता राजकीय महाविद्यालय कंवाली के सहायक प्रोफेसर डा. कर्मवीर सिंह ने कहा कि अरुणा आसफ अली ने राष्ट्रीय आंदोलन से बढ़कर राष्ट्र निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इस मौके पर महाविद्यालय के प्राचार्य डा. राजकुमार वर्मा, जितेंद्र, डा. सुरेंद्र सिंह, डा. अजय कुमार, डा. राजपाल सिंह, अजय सिंह, लोहारू महाविद्यालय से विचित्र सिंह, बहु महाविद्यालय से नरेंद्र कुमार, कंवाली महाविद्यालय से डा. रतन लाल, डा. अर्जुन, डा. सतीश कुमार, पुष्पा गुलिया, बवानी खेड़ा महाविद्यालय से डा. नीना कुमारी ने भी विचार रखे।

दैनिक भास्कर

चरखी दादरी भास्कर 17-07-2021

अरुणा आसफ अली ने संघर्ष की छाप पूरे भारतवर्ष में छोड़ी : डॉ. अमरदीप

स्वतंत्रता सेनानी की 112वीं जयंती पर राष्ट्रीय वेबिनार आयोजित

भास्कर न्यूज | चरखी दादरी

गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय के स्वतंत्रता सेनानी अरुणा आसफ अली की 112वीं जयंती पर राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। इस वेबिनार के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने बताया कि अरुणा आसफ अली भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की महिला शक्ति की जागृति का जीता जागता प्रमाण थी। अरुणा आसफ अली ने आजादी के संघर्ष में महिलाओं की भागीदारी को सुनिश्चित किया और अंग्रेजी सरकार को घुटने टेकने पर मजबूर किया।

आजादी के संघर्ष के ऐसे महान सेनानी अरुणा आसफ अली का जन्म हरियाणा के कालका में 16 जुलाई 1909 में हुआ था और अपने संघर्ष की छाप पूरे भारत भर में छोड़ी। राष्ट्रीय वेबिनार के मुख्य वक्ता सहायक प्रोफेसर डॉ. कर्मवीर सिंह, कंवाली ने कहा कि अरुणा आसफ अली ने राष्ट्रीय आंदोलन से बढ़कर राष्ट्र निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। डॉ. सिंह ने कहा कि 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में इतनी बड़ी भूमिका निभाई जिसके कारण अंग्रेजी सरकार को इनके गैर जमानती वारंट जारी करते हुए इनके ऊपर 5000 रुपये का बड़ा इनाम रखना पड़ा जिसकी आज कीमत लाखों-करोड़ों रुपये में है जो साबित करता है कि बिर्तानिया सरकार भी इनसे खौफ खाने लगी थी। सहायक प्राध्यापक सवीन ने कहा कि यह हमारे लिए गर्व की बात है कि हम उस प्रदेश हरियाणा के वासी है जहां अरुणा आसफ अली जैसे महान स्वतंत्रता सेनानियों ने जन्म लिया। प्राचार्य और राष्ट्रीय वेबिनार के संरक्षक डॉ. राजकुमार वर्मा ने कहा कि अरुणा आसफ अली ने आजादी के संघर्ष के दौरान युवा शक्ति को जागृत करने में और आजादी के बाद में एक सशक्त भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वेबिनार में बिरोहड़ महाविद्यालय से डॉ. सुरेन्द्र सिंह, डॉ. अजय कुमार, डॉ. राजपाल सिंह, अजय सिंह, लोहारू महाविद्यालय से विचित्र सिंह, बहु महाविद्यालय से नरेंद्र कुमार, कंवाली महाविद्यालय से डॉ. रत्न लाल, बरोता महाविद्यालय से डॉ. अर्जुन व डॉ. सतीश कुमार समेत अन्य मौजूद थे।

को। इस दौरान सुखदेव, सूरजभान और विनोद शर्मा आदि मौजूद रहे।

अमर उजाला, चरखी दादरी 17.7.2021

आजादी के संघर्ष में आसफ अली की अहम भूमिका : डॉ. कर्मवीर

संवाद न्यूज एजेंसी

चरखी दादरी। आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में स्वतंत्रता सेनानी अरुणा आसफ अली की 112वीं जयंती पर राष्ट्रीय वेबिनार किया। इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने बताया कि अरुणा आसफ अली भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की महिला शक्ति की जागृति का जीता जागता प्रमाण थीं।

आजादी के संघर्ष के ऐसे महान सेनानी अरुणा आसफ अली का जन्म हरियाणा के कालका में 16 जुलाई 1909 में हुआ था और अपने संघर्ष की छाप पूरे भारत में छोड़ी। राष्ट्रीय वेबिनार के मुख्य वक्ता डॉ. कर्मवीर सिंह ने कहा कि अरुणा आसफ अली ने राष्ट्रीय आंदोलन से बढ़कर राष्ट्र निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। प्राचार्य और राष्ट्रीय वेबिनार के संरक्षक डॉ. राजकुमार वर्मा ने कहा कि अरुणा आसफ अली ने आजादी के संघर्ष के दौरान युवा शक्ति को जागृत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस मौके पर आयोजन सचिव जितेंद्र, डॉ. सुरेंद्र सिंह, डॉ. अजय कुमार, डॉ. राजपाल सिंह, अजय सिंह, विचित्र सिंह, नरेंद्र कुमार, डॉ. रत्नलाल, डॉ. अर्जुन, डॉ. सतीश कुमार, पुष्पा गुलिया व डॉ. नीना कुमारी आदि मौजूद रहे।

15. Dr. Amardeep worked as convener and organised a special programme on Great Freedom Fighter & Revolutionary Sardar Udham Singh on his 81st martyrdom on 31.7.2021 under आजादी का अमृत महोत्सव programme and delivered an expert lecture on Role of Sardar Udham Singh in Freedom Struggle.

कार्यक्रम

कानूनों के विरोध में कितलाना ... आयोजित होगा। शिविर की अध्यक्षता दिल्ली पुलिस के ... सीसीटीवी कैमरे, पार्किंग, ओवरलोडिंग आदि बिंदुओं पर चर्चा होगी। इसमें रोड सेफ्टी के ... के संचालन को लेकर भी चर्चा होगी। संवाद

चरखी दादरी अमर उजाला 1.8.21

ऊधम सिंह ने क्रांतिकारी आंदोलन को दी दिशा : अमरदीप

शहीदी दिवस पर अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत महाविद्यालय बिरोहड़ में करवाया गया विशेष कार्यक्रम का आयोजन

संवाद न्यूज एजेंसी

चरखी दादरी। आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में महाविद्यालय में महान स्वतंत्रता सेनानी एवं क्रांतिकारी ऊधम सिंह के 81 वें शहीदी दिवस पर विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि राष्ट्रीय एकता के मसीहा सरदार उधम सिंह ने भारतीय समाज की एकता के लिए अपना नाम बदलकर राम मोहम्मद सिंह आजाद रख लिया था, जो भारत के तीन प्रमुख धर्मों का प्रतीक है। डॉ. अमरदीप ने बताया कि ऊधम सिंह के सामने 13 अप्रैल 1919 को जलियांवाला बाग नरसंहार हुआ था। उन्होंने जलियांवाला बाग की मिट्टी हाथ में लेकर जनरल डायर और तत्कालीन पंजाब के गवर्नर माइकल ओड्वायर को सबक सिखाने की प्रतिज्ञा ले ली थी। ऊधम सिंह ने लंदन जाकर 13 मार्च 1940 को रॉयल सेंट्रल एशियन सोसायटी की बैठक में माइकल ओड्वायर पर दो गोलियां दाग मौत के घाट उतार दिया था। इसके साथ ही ऊधम सिंह ने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की और दुनिया को संदेश दिया कि अत्याचारियों को भारतीय वीर कभी छोड़ा नहीं करते। सहायक प्राध्यापक इतिहास सचीन ने कहा कि क्रांतिकारी आंदोलन को शहीद ऊधम सिंह ने एक नई दिशा दी। कार्यक्रम में जितेंद्र, नरेंद्र सिंह, ओमबीर व राजेश कुमार आदि उपस्थित रहे।

कार्यक्रम में संबोधित करते संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप। (छवि)

शहीद ऊधम सिंह को किया नमन

चरखी दादरी। गांव नांधा स्थित आदर्श सीनियर सेकेंडरी स्कूल में शहीद ऊधम सिंह को याद किया गया। इस अवसर पर निदेशक कुलदीप सांगवान, प्रधान मांगेराम जाखड़, प्रधानाचार्य मनदीप कुमार आदि ने शहीद ऊधम सिंह के चित्र के समक्ष पुष्प अर्पित किए। कुलदीप ने कहा कि गदर पार्टी से जुड़ने के बाद उधम सिंह पांच साल तक कारावास में भी रहे थे। उन्होंने जलियांवाला बाग की मिट्टी हाथ में लेकर जनरल डायर और पंजाब के गवर्नर माइकल ओ डायर को सबक सिखाने की प्रतिज्ञा ली थी और नरसंहार का बदला लिया। संवाद

कविता स्पर्धा में स्वाति और अनुज ने मारी बाजी

आर्यावर्त स्कूल में आयोजित स्पर्धाओं के विजेता प्रतिभागी शिक्षकों के साथ। (छवि)

संवाद न्यूज एजेंसी

झोझूकलां। आर्यावर्त वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में महान क्रांतिकारी व देशभक्त सरदार उधम सिंह के शहीदी दिवस पर उनको श्रद्धांजलि अर्पित की गई। कार्यक्रम के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ, जिनमें प्रतिभागियों ने देशभक्ति की भावना से ओत-प्रोत कविताएं व भाषण की प्रस्तुतियां दीं। स्पर्धा में स्वाति और अनुज संयुक्त रूप से पहले और कशिश व मुस्कान ने दूसरा स्थान प्राप्त किया।

कार्यक्रम में अध्यापिका पूजा व सुशीला का मार्गदर्शन रहा। इसी दौरान सीबीएसई द्वारा जारी कक्षा 12वीं के वार्षिक परीक्षा परिणाम में उत्कृष्ट अंक प्राप्त करने पर छात्रा प्रिया, उर्वशी बंसल, प्रियंका, रिंकेश, वर्षा व गीतिका समेत अन्य मेधावियों विद्यार्थियों को बधाई दी गई। इस अवसर पर प्रधानाचार्य संदीप जैन, निदेशक पवन वशिष्ठ, सज्जन सांगवान, सचिव सुखबीर सांगवान, अमित, विक्रांत, रविंद्र, सुरेंद्र कोच, उमना आदि मौजूद रहे।

दैनिक भास्कर चरखी दादरी भास्कर 01-08-2021

बिरोहड़ के राजकीय कॉलेज में किया स्वतंत्रता सेनानी उधम सिंह को याद

भास्कर न्यूज़ | चरखी दादरी

आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय के महान स्वतंत्रता सेनानी एवं क्रांतिकारी उधम सिंह के 81वें शहीदी दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने बताया कि राष्ट्रीय एकता के मसीहा सरदार उधम सिंह ने भारतीय समाज की एकता के लिए अपना नाम बदलकर राम मोहम्मद सिंह आजाद रख लिया था। जो भारत के तीन प्रमुख धर्मों का प्रतीक है। डॉ. अमरदीप ने बताया कि उधम सिंह के सामने ही 13 अप्रैल 1919 को जलियांवाला बाग नरसंहार हुआ था और उन्होंने अपनी आंखों से जनरल डायर की काली करतूत देखी थी और वे गवाह थे, उन हजारों भारतीयों की हत्या के, जो जनरल डायर के आदेश पर गोलियों के शिकार हुए थे। यहीं पर उधम सिंह ने जलियांवाला बाग की मिट्टी हाथ में लेकर जनरल डायर और तत्कालीन पंजाब के गर्वनर माइकल ओ' ड्वायर को सबक सिखाने की प्रतिज्ञा ली।

उधम सिंह ने लन्दन जाकर 13 मार्च 1940 को रॉयल सेंट्रल एशियन सोसायटी की लंदन के काक्सटन हॉल की मीटिंग में जहां माइकल ओ' ड्वायर भाषण दे रहे थे तब उधम सिंह ने दो गोलियां ड्वायर को लगी जिससे उसकी तुरंत मौत हो गई। इसके साथ ही उधम सिंह ने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की और दुनिया को संदेश दिया कि अत्याचारियों को भारतीय वीर कभी छोड़ा नहीं करते। सहायक प्राध्यापक सवीन ने कहा कि क्रांतिकारी आंदोलन को शहीद उधम सिंह ने एक नई दिशा दी और अंग्रेजों को भयभीत कर दिया था। इस विशेष कार्यक्रम में जितेन्द्र, डॉ. नरेंद्र सिंह, ओमबीर, राजेश कुमार इत्यादि उपस्थित रहे।

पुण्यतिथि मनाई

बाढड़ा| नान्धा गांव में स्थित आदर्श सीनियर सेकेंडरी स्कूल में शहीद उधम सिंह की पुण्यतिथि मनाई गई तथा शहीद भगत सिंह के जीवन के बारे में जानकारी दी गई। संस्था के निदेशक कुलदीप सांगवान, प्रधान मांगेराम जाखड़, प्रधानाचार्य मनदीप कुमार आदि ने कहा कि आज भारत मां के वीर सपूत शहीद उधम सिंह की पुण्यतिथि है, जिसने दुश्मन को उसी के घर में घुसकर मारा और जलियांवाला बाग नरसंहार का बदला लिया था। सरदार उधम सिंह ने भारतीय समाज की एकता के लिए अपना नाम बदलकर राम मोहम्मद सिंह आजाद रख लिया था, जो भारत के तीन प्रमुख धर्मों का प्रतीक है। ऊधम सिंह ने पासपोर्ट बनवाने के लिए अपना नाम बदल लिया था। गदर पार्टी से जुड़ने के बाद उधम सिंह पांच साल तक कारावास में भी रह कर आये थे।

16. Dr. Amardeep organised a special tree plantation drive on 07.08.2021 on the occasion of 80th death anniversary of great philosopher and freedom fighter and Nobel winner Guru Rabinder Nath Tegore and planted Triveni on this occasion under आज़ादी का अमृत महोत्सव कार्यक्रम .

अमर उजाला चरखी दादरी 8.8.21

गुरु रविंद्रनाथ टैगोर की 80वीं पुण्यतिथि पर लगाई त्रिवेणी

चरखी दादरी। बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में नोबेल विजेता एवं स्वतंत्रता सेनानी गुरु रविंद्रनाथ टैगोर की 80वीं पुण्यतिथि पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस दौरान त्रिवेणी रोपित की गई। इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि रविंद्रनाथ टैगोर ने अंग्रेजी आधिपत्य के खिलाफ असहयोग आंदोलन के दौरान 'सर' की उपाधि त्याग करके संघर्ष का बिगुल बजाया था पौधरोपण के दौरान जितेंद्र, पवन कुमार, निशा रानी, संदीप, पूर्ण, रामजीत, अमरदीप, सोमबीर, पवन कुमार आदि उपस्थित रहे। संवाद

17. Dr. Amardeep worked as convener and organised a special programme on the 113th martyrdom of Great Freedom Fighter & revolutionary Khudi Ram Bose on 11.08.2021 under आजादी का अमृत महोत्सव programme and delivered an expert lecture on "Revolutionary Movement and Contribution of Khudi Ram Bose"..

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 12.8.21

बिरोहड़ में खुदीराम बोस का 113वां शहीदी दिवस मनाया, शहादत को किया नमन

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी एवं क्रांतिकारी खुदीराम बोस के 113वें शहीदी दिवस पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डा. अमरदीप ने बताया कि देश की आजादी की लड़ाई में कुछ नौजवानों का बलिदान इतना उद्वेलित करने वाला था कि उसने पूरे देश में स्वतंत्रता संग्राम का रूख बदलकर रख दिया। इनमें एक नाम खुदीराम बोस का है जिन्हें 11 अगस्त 1908 को फांसी दे दी गई। उस समय उनकी उम्र महज 18 साल कुछ महीने थी। अंग्रेज सरकार उनकी निडरता और वीरता से इस कदर आतंकित थी कि उनकी कम उम्र के बावजूद उन्हें फांसी की सजा सुनाई गयी। डा. अमरदीप ने कहा कि खुदीराम की लोकप्रियता का यह आलम था कि उनको फांसी दिए जाने के बाद बंगाल के जुलाहे एक खास किस्म की धोती बुनने लगे, जिसकी किनारी पर खुदीराम लिखा होता था।

बंगाल के नौजवान बड़े गर्व से वह धोती पहनकर आजादी की लड़ाई में कूद पड़े। खुदीराम बोस का जन्म बंगाल के मिदनापुर में हुआ था। वह तब 15 साल के थे जब अनुशीलन समिति का हिस्सा बने थे। डा. अमरदीप ने बताया कि 13 जून 1908 को खुदीराम बोस को फांसी की सजा सुनाई गई तो उनके चेहरे पर कोई शिकन नहीं थी।

स्वतंत्रता आंदोलन को शहीद खुदीराम बोस ने एक नई क्रांतिकारी दिशा दी। इस विशेष कार्यक्रम में सवीन, जितेन्द्र, डा. नरेंद्र सिंह, ओमबीर, राजेश कुमार, डा. अजय कुमार, डा. राजपाल और नवीन कुमार, इतिहास प्राध्यापक, कुलाना इत्यादि उपस्थित रहे।

विद्यार्थियों को शहीद खुदीराम बोस के जीवन के बारे में बताते डा. अमरदीप। ● विज्ञप्ति

बीमारियां फैलने का खतरा भी बना हुआ लेकर वे मंगलवार को एसडीएम से मिले कड़ा कदम उठाने को विवश होंगे।

अमर उजाला चरखी दादरी 12अगस्त21

खुदीराम बोस को सबसे कम उम्र में दी फांसी : अमरदीप

महान क्रांतिकारी खुदीराम बोस के 113वें शहीदी दिवस पर राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में कार्यक्रम

संवाद न्यूज एजेंसी

चरखी दादरी। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में महान स्वतंत्रता सेनानी एवं क्रांतिकारी खुदीराम बोस के 113 वें शहीदी दिवस पर विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने बताया कि देश की आजादी की लड़ाई में कुछ नौजवानों का बलिदान इतना उद्वेलित करने वाला था कि उसने पूरे देश में स्वतंत्रता संग्राम का रुख बदलकर रख दिया। इनमें एक नाम खुदीराम बोस का है, जिन्हें 11 अगस्त 1908 को फांसी दे दी गई। उस समय उनकी उम्र महज 18 साल थी। डॉ. अमरदीप ने कहा कि खुदीराम की लोकप्रियता का यह आलम था कि उनको फांसी दिए जाने के बाद बंगाल के जुलाहे एक खास किस्म की धोती बुनने लगे। इसकी किनारी पर खुदीराम लिखा होता था। खुदीराम बोस का जन्म बंगाल के

राजकीय कॉलेज बिरोहड़ में आयोजित कार्यक्रम में मौजूद प्राध्यापक व विद्यार्थी। विज्ञप्ति

मिदनापुर में हुआ था। वह तब 15 साल के थे, जब अनुशीलन समिति का हिस्सा बने थे। एक साल में ही खुदीराम बोस ने बम बनाना सीख लिया था और वे उन्हें पुलिस थानों के बाहर प्लास्ट करते थे। 1908 में खुदीराम बोस को मुजफ्फरपुर के जिला मजिस्ट्रेट किंग्सफोर्ड की हत्या का काम सौंपा गया। किंग्सफोर्ड की हत्या के पहले कई प्रयास हुए थे लेकिन सब विफल रहे। खुदीराम बोस को गिरफ्तार कर लिया। 13 जून 1908 को खुदीराम बोस को फांसी की सजा सुनाई गई। कार्यक्रम में सवीन, जितेंद्र, डॉ. नरेंद्र सिंह, ओमबीर, राजेश कुमार, डॉ. अजय कुमार, डॉ, राजपाल,नवीन कुमार, कुलाना आदि उपस्थित रहे।

18. Dr. Amardeep worked as convener and organised a special programme on the 75th Independence Day on 14.08.2021 under आजादी का अमृत महोत्सव programme and delivered an expert lecture on “the History of Independence Day”. Dr. Amardeep also distributed free gifts to fourth class employees on this occasion from his pocket.

झज्जर हरिभूमि 15.8.21

बलिदानों के बाद देश को मिली आजादी

झज्जर। आजादी का अमृत महोत्सव कार्यक्रम के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में भारतीय स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉक्टर अमरदीप ने बताया कि आजादी हमें बहुत बलिदानों से मिली है। 14-15 अगस्त 1947 की अर्धरात्रि को जब सारी दुनिया सो रही थी तब भारत आजादी की नई सुबह के साथ जागता है। देश के असंख्य लोगों ने आजादी के लिए जो संघर्ष किया उसका बेहतरीन परिणाम उन्हें 15 अगस्त को मिला, जब सदियों पुरानी अंग्रेंजी हुकूमत की दासता समाप्त हुई। महाविद्यालय प्राचार्य राजकुमार वर्मा ने कहा कि कड़े.संघर्ष के बाद मिली आजादी के बाद आज भारत देश विश्व की बड़ी शक्तियों में शुमार है।

बढ़ावा देने के लिए युवाओं को आगे आना चाहिए।

अधिवक्ताओं ने हिंदी को बढ़ावा देने के लिए अमर उजाला ... गई हिंदी हैं हम मुहिम का समर्थन किया ... और युवाओं से भी इससे जुड़ने की अपील की। ... के लिए आम आदमी को अपनी सोच बदलनी होगी। हिंदी के उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद ने हिंदी भाषा में करीब 300 ... लिखकर समाज को दर्पण दिखाया है।

अमर उजाला, चरखी दादरी 15.8.21

एक-दूसरे की आजादी का सम्मान करें : राजकुमार वर्मा

चरखी दादरी। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में इतिहास विभाग के तत्वावधान में स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने बताया कि आजादी हमें बहुत बलिदानों से मिली है। कार्यक्रम के अध्यक्ष महाविद्यालय प्राचार्य राजकुमार वर्मा ने कहा कि हर व्यक्ति को अपनी और दूसरे व्यक्ति की आजादी का सम्मान करना है। लेक्चरर डॉ. अजय कुमार ने कहा कि अंग्रेजों को भारत से बाहर निकालने के लिए सारा भारत एकजुट हो चुका था। कार्यक्रम में सवीन, जितेंद्र, डॉ. नरेंद्र सिंह, ओमबीर, राजेश कुमार, पवन कुमार, डॉ. राजपाल और अजय सिंह उपस्थित थे। संवाद

च. दादरी जागरण
E-Paper
15.8.21

Charkhi Dadr

डा. अमरदीप ने स्वतंत्रता के इतिहास की दी जानकारी

जासं, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में 75वें भारतीय स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम के संयोजक डा. अमरदीप ने बताया कि आजादी हमें बहुत बलिदानों से मिली है। दिसंबर 1929 में पहली बार भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने पूर्ण स्वराज का प्रस्ताव पास किया था। जिसके बाद 26 जनवरी 1930 को पहली बार पूरे भारत में तिरंगा लहराया गया था। 12 मार्च 1930 को नमक सत्याग्रह एवं दांडी मार्च के तहत महात्मा गांधी ने अंग्रेजों को भारत से बाहर निकालने का अभियान चलाया।

14-15 अगस्त 1947 की अर्धरात्रि को जब सारी दुनिया सो रही थी तब भारत आजादी की नई सुबह के साथ जागा। कार्यक्रम के अध्यक्ष महाविद्यालय प्राचार्य राजकुमार वर्मा ने भी अपने विचार रखे। इस अवसर पर डा. अजय कुमार, सवीन, जितेंद्र, डा. नरेंद्र सिंह, ओमबीर, राजेश कुमार, पवन कुमार, डा. राजपाल भी उपस्थित रहे।

19. Dr. Aamrdeep participated in Flag Hosting ceremony on the occasion of 74th Independence Day i.e. 15.08.2021 and delivered an expert lecture on “Importance of Independence: A Struggle from 1857 to 1947”. He also organized a cultural programme on this auspicious occasion.

व रामू आदि मौजूद रहे। संवाद

अमर उजाला चरखी दादरी 17.8.21

छात्राओं ने दीं सांस्कृतिक प्रस्तुतियां

चरखी दादरी। बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में 75वें स्वतंत्रता दिवस पर ध्वजारोहण के साथ सांस्कृतिक कार्यक्रम करवाए गए। इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने बताया कि 1857 के विद्रोह से आजादी के आंदोलन की जो चिंगारी जली थी, वो 1947 तक आते आते एकज्वालामुखी बनी। छात्रा आशा रानी, नैंसी व प्रिया ने सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दीं। संवाद

20. Dr. Amardeep worked as convener and organised a special programme on the 112nd martyrdom of Great Freedom Fighter & revolutionary Madan Lal Dhingra on 17.08.2021 under आजादी का अमृत महोत्सव programme and delivered an expert lecture on “Revolutionary Movement in Abroad with special reference to Madan Lal Dhingra”..

दैनिक भास्कर चरखी दादरी भास्कर 18-08-2021

मदनलाल ढींगड़ा के 112वीं शहीदी दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन

भास्कर न्यूज | चरखी दादरी

गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में मदनलाल ढींगड़ा के 1 1 2 वीं शहीदी दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने बताया कि आजादी हमे बहुत बलिदानों से मिली है।

स्वतंत्रता की चिंगारी को अग्नि में बदलने का श्रेय ढींगड़ा को ही जाता है : डॉ. अमरदीप

डॉ. अमरदीप ने कहा कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अप्रतिम क्रांतिकारी थे। भारतीय स्वतंत्रता की चिंगारी को अग्नि में बदलने का श्रेय महान शहीद मदन लाल धींगड़ा को ही जाता है। मदन लाल ढींगड़ा का जन्म 18 सितंबर, 1883 को पंजाब में हुआ था। डॉ. अमरदीप ने बताया कि मदनलाल ढींगड़ा को पेण्टोविले की जेल, लंदन में फ़ांसी पर चढ़ाया गया। यह वही जेल थी जहां शहीद उधमसिंह को भी फांसी दी गई थी।

कार्यक्रम के दूसरे भाग में प्राध्यापक सवीन ने बताया कि 17 अगस्त 1947 को भारत-पाकिस्तान के बंटवारे की लकीर का ऐलान किया गया था और रेडक्लिफ के नेतृत्व में 5 सप्ताहों में भारत विभाजन की रुपरेखा तैयार की गई जिसमे प्रभावित क्षेत्रों की ऐताहासिक और सांस्कृतिक पहलुओं को अनदेखा किया। इस विभाजन से लगभग 10 करोड़ से ज्यादा प्रभावित हुए और हजारों लोग सांप्रदायिक हिंसा में मारे गये।

प्राचार्य डॉ. राजकुमार वर्मा ने कहा कि अंग्रेजी हुकूमत ने कभी भी भारतीय क्रांतिकारियों के साथ उचित बर्ताव नहीं किया। आजादी के बाद 13 दिसम्बर, 1976 को शहीद उधम सिंह की शव को तलाशने आई भारतीय टीम को मदनलाल ढींगड़ा का भी शव मिला जिसे बाद में आजाद भारत में विधिवत तरीके से दफना दिया गया। एक महान क्रांतिकारी को पराधीन भारत में मरने का तो मौका नहीं मिला पर उनकी अस्थियों को आजाद भारत की मिट्टी नसीब हुई। इस विशेष कार्यक्रम में जितेंद्र, डॉ. नरेंद्र सिंह, राजेश कुमार, पवन कुमार इत्यादि उपस्थित रहे।

अमर उजाला, दादरी 18.8.21

मदनलाल धींगड़ा ने स्वतंत्रता की चिंगारी को अग्नि में बदलाः अमरदीप

चरखी दादरी। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में मदनलाल धींगड़ा के 112 वें शहीदी दिवस पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने बताया कि भारतीय स्वतंत्रता की चिंगारी को अग्नि में बदलने का श्रेय महान शहीद मदन लाल धींगड़ा को ही जाता है।

उन्होंने कहा कि मदन लाल का जन्म 18 सितंबर 1883 को पंजाब में हुआ था। सावरकर मदनलाल की क्रांतिकारी भावना और उनकी इच्छाशक्ति से बहुत प्रभावित हुए। इसके बाद मदनलाल, वीर सावरकर के साथ मिलकर काम करने लगे। उन्होंने वाइसराय लॉर्ड कर्जन को भी मारने की कोशिश की थी पर कामयाब नहीं हो पाए थे। मदनलाल धीगड़ा ने एक जुलाई 1909 को कर्जन वाइली को इंडियन नेशनल एसोसिएशन के वार्षिकोत्सव में गोली मारकर मौत के घाट उतार दिया था। इसके लिए धींगड़ा को 17 अगस्त 1909 को फांसी दे दी गई। कार्यक्रम में प्राध्यापक सवीन ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम में प्राचार्य डॉ. राजकुमार वर्मा, जितेंद्र, डॉ. नरेंद्र सिंह आदि उपस्थित रहे। संवाद

21. Dr. Amardeep worked as convener and organised a special programme on the 113th Birth Anniversary of Great Freedom Fighter & Revolutionary Shaheed Rajguru on 24.08.2021 under आजादी का अमृत महोत्सव programme and delivered an expert lecture on "Revolutionary Movement during Inter-Wars Period with special reference to Shaheed Rajguru". Dr. Amardeep also distributed free gifts to fourth class employees on this occasion from his pocket.

दैनिक भास्कर चरखी दादरी भास्कर 25-08-2021

राजगुरु क्रांतिकारी आंदोलन के एक चमकते सितारे थेः डॉ. अमरदीप

बिरोहड़ स्कूल में शहीद राजगुरु की 113वीं जन्मदिवस पर कार्यक्रम का आयोजन

भास्कर न्यूज़ | चरखी दादरी

गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में महान क्रांतिकारी एवं शहीद राजगुरु की 113वीं जन्मदिवस के उपलक्ष्य में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने बताया कि राजगुरु का स्थान क्रांतिकारी आन्दोलन में एक महत्वपूर्ण स्थान है जिन्होंने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को नई दिशा दी। आजादी के मतवाले और अंग्रेजी हुकूमत को हिलाने वाले महान क्रांतिकारी राजगुरु का जन्म 24 अगस्त 1908 को पुणे के खेड़ गांव में हुआ था। रौलट एक्ट और जलियांवाला बाग हत्याकांड ने राजगुरु के व्यक्तित्व पर गहरा प्रभाव डाला और असहयोग आंदोलन की विफलता ने इन्हें क्रांतिकारी पथ पर अग्रसित किया। बनारस में रहते हुए राजगुरु की मुलाकात क्रांतिकारी दलों के सदस्यों से हुई जिनके संपर्क में आने के बाद ये पूरी तरह से हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन

महान क्रांतिकारी एवं शहीद राजगुरु की 113वीं जन्मदिवस पर आयोजित कार्यक्रम में विद्यार्थियों को संबोधित करते वक्ता।

एसोसिएशन दल के सक्रिय सदस्य बन गये। इस दल से जोड़ने में चंद्रशेखर आजाद ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इतिहास प्राध्यापक सवीन ने बताया कि साइमन कमीशन के खिलाफ आंदोलन ने और उसके बाद लाला लाजपत राय की मृत्यु ने क्रांतिकारियों, भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु ने प्रण लिया था कि ब्रिटिश अधिकारी स्कॉट को मारकर लालाजी की मौत का बदला लिया जाएगा। परंतु इस कार्रवाई में सांडर्स मारा गया परंतु इससे अंग्रेजी सरकार में दहशत का माहौल पैदा हो गया। बाद में इन सब क्रांतिकारियों को पकड़ा गया और 23 मार्च 1931 को इन्हें फांसी दी गई। कार्यक्रम के अध्यक्ष प्राचार्य राजकुमार वर्मा ने कहा कि राजगुरु क्रांतिकारी आंदोलन के एक चमकते सितारे थे जिन्होंने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया। कार्यक्रम के अंत में डॉ. अमरदीप ने राजगुरु के जन्मदिन पे महाविद्यालय के चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों को उपहार देकर सम्मानित किया। कार्यक्रम में जितेंद्र, ओमबीर, डॉ. अजय कुमार, राजेश कुमार, डॉ. राजपाल और अजय सिंह आदि उपस्थित रहे।

समर्थन दिया है। कार्यक्रम के दौरान शिक्षिकाओं और छात्राओं ने हिंदी का ज्यादा से ज्यादा प्रचार...

रिया, दसवीं कक्षा

शपथ ली। छात्रा ज्योति, कशिश, रिया और खुशी...

व्यक्तित्व भी झलकता है। देशवासियों को एकता के सूत्र में पिरोने का हिंदी सरल माध्यम है।

खुशी, दसवीं कक्षा

खाका खींचा। इस अवसर पर ईश्वर सिंह, पूजा, नैंसी, विशाल, शिवम, रतनपाल, मि..., सिलोनी आदि मौजूद रहे। संवाद

अमर उजाला चरखी दादरी 25.8.21

राजगुरु ने हिलाकर रख दी थी अंग्रेजी हुकूमत : डॉ. अमरदीप

संवाद न्यूज एजेंसी

आजादी का अमृत महोत्सव के तहत महाविद्यालय में हुआ कार्यक्रम

चरखी दादरी। आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में इतिहास विभाग के तत्वावधान में महान क्रांतिकारी एवं शहीद राजगुरु की 113 वें जन्म दिवस पर कार्यक्रम किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने बताया कि राजगुरु का क्रांतिकारी आंदोलन में महत्वपूर्ण स्थान है जिन्होंने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को नई दिशा दी। आजादी के मतवाले और अंग्रेजी हुकूमत को हिलाने वाले महान क्रांतिकारी राजगुरु का जन्म 24 अगस्त 1908 को पुणे के खेड़े गांव में हुआ था। रोलट एक्ट और जलियांवाला बाग हत्याकांड ने राजगुरु के व्यक्तित्व पर गहरा प्रभाव डाला और असहयोग आंदोलन की विफलता ने इन्हें क्रांतिकारी पथ पर अग्रसर किया। बनारस में रहते हुए राजगुरु की मुलाकात क्रांतिकारी दलों के सदस्यों से हुई, जिनके संपर्क में आने के बाद वे पूरी तरह से हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन दल के सक्रिय सदस्य बन गये।

इतिहास प्राध्यापक सवीन ने बताया कि साइमन कमीशन के खिलाफ आंदोलन और उसके बाद लाला लाजपत राय की मृत्यु ने क्रांतिकारियों भगत सिंह, सुखदेव व राजगुरु ने प्रण लिया था कि ब्रिटिश अधिकारी स्कॉट को मारकर लाला लाजपतराय की मौत का बदला लिया जायेगा परंतु इस कार्यवाही में सांडर्स मारा गया। इससे अंग्रेजी सरकार में दहशत का माहौल पैदा हो गया। बाद में इन सब क्रांतिकारियों को पकड़ा गया और 23 मार्च 1931 को इन्हें फांसी दी गई। कार्यक्रम के अध्यक्ष महाविद्यालय प्राचार्य राजकुमार वर्मा ने कहा कि राजगुरु क्रांतिकारी आंदोलन के एक चमकते सितारे थे।

दैनिक जागरण चरखी दादरी, 25.8.21

बिरोहड़ कालेज में मनाई शहीद राजगुरु की जयंती

गांव बिरोहड़ कालेज में शहीद राजगुरु जयंती पर चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी स्टाफ सदस्यों के साथ। ● विज्ञप्ति।

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में महान क्रांतिकारी एवं शहीद राजगुरु की 113 वीं जन्मदिवस के उपलक्ष्य में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के संयोजक एवम इतिहास विभागाध्यक्ष डा. अमरदीप ने बताया कि राजगुरु का स्थान क्रांतिकारी आंदोलन में एक महत्वपूर्ण स्थान है जिन्होंने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को नई दिशा दी। आजादी के मतवाले और अंग्रेजी हुकूमत को हिलाने वाले महान क्रांतिकारी राजगुरु का जन्म 24 अगस्त 1908 को पुणे के खेड़ में हुआ था। रोलेट एक्ट और जलियांवाला बाग हत्याकांड ने राजगुरु के व्यक्तित्व पर गहरा प्रभाव डाला और असहयोग आंदोलन की विफलता ने इन्हें क्रांतिकारी पथ पर अग्रसर किया। प्राध्यापक सवीन ने बताया कि साइमन कमीशन के खिलाफ आंदोलन ने और उसके बाद लाला लाजपतराय की मृत्यु ने क्रांतिकारियों, भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु ने प्रण लिया था कि ब्रिटिश अधिकारी स्काट को मारकर लालाजी की मौत का बदला लिया जाएगा। परंतु इस कार्यवाही में सांडर्स मारा गया परंतु अंग्रेजी सरकार में दहशत का माहौल पैदा हो गया। बाद में इन सब क्रांतिकारियों को पकड़ा गया।

22. Dr. Amardeep worked as convener and organised a special programme on the 116th Birth Anniversary of Legendary sportsperson and Khel Ratna Major Dhayan Chand on 28.08.2021 under आजादी का अमृत महोत्सव programme and delivered an expert lecture on “Golden Age of Indian Hockey and Major Dhayan Chand”.

दैनिक भास्कर

चरखी दादरी भास्कर 29-08-2021

चरखी दादरी

मेजर ध्यानचंद को किया याद

गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में विशेष कार्यक्रम आयोजित

भास्कर न्यूज | चरखी दादरी

गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में हॉकी के जादूगर खेल रत्न मेजर ध्यान चंद के 116वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने बताया कि 29 अगस्त 1905 को इलाहाबाद में जन्मे मेजर ध्यानचंद ने 22 साल के लंबे करियर में 400 से अधिक गोल करने वाले का गौरव प्राप्त करके आज भी करोड़ों भारतीयों को प्रेरित करते हैं। कार्यक्रम के अध्यक्ष प्राचार्य राजकुमार वर्मा ने बताया कि हिटलर ध्यानचंद के 'जादू' से इस कदर प्रभावित था कि उसने उन्हें जर्मन सेना में कर्नल की रैंक के साथ जर्मनी की नागरिकता की पेशकश भी की थी, लेकिन ध्यानचंद ने यह कहते हुए जर्मन तानाशाह का ऑफर नकार दिया था, हिंदुस्तान मेरा वतन है और मैं वहां खुश हूं। भूगोल प्राध्यापक ओमबीर ने बताया कि जब वह खेलते थे तो गेंद मानो उनके स्टकि से चिपक जाती थी और हॉलैंड में एक मैच के दौरान उनके स्टिक में चुंबक होने की आशंका के मद्देनजर उसे तोड़कर भी देखा गया था। आज भी 29 अगस्त को राष्ट्रीय खेल दिवस के रूप में मनाया जाता है और खेल की सभी स्पर्धाओं के पुरस्कार भी इसी दिन दिया जाता है। इस विशेष कार्यक्रम में सवीन, जितेंद्र, डॉ. अजय कुमार, डॉ. राजपाल और अजय सिंह आदि उपस्थित रहे।

बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में कार्यक्रम को संबोधित करते वक्ता।

कारीदास स्कूल में मेजर ध्यानचंद को नमन किया

बाढड़ा| राष्ट्रीय खेल दिवस पर कारीदास के राजकीय माध्यमिक विद्यालय में खेलों पर विशेष कार्यक्रम आयोजित किया तथा मेजर ध्यानचंद को नमन किया। इस अवसर पर मा. मनोज जांगड़ा ने अपने वेतन में से 15 हजार रुपये की राशि से खिलाड़ियों को खेल का सामान भेंट किया। मा. मनोज जांगड़ा ने वह स्वयं खेलों में रुचि रखते हैं तथा मा.प्रीतम सिंह की खेल व पर्यावरण क्षेत्र की भावना को देखते हुए बच्चों को पंद्रह हजार की राशि के खेलों का सामान भेंट करने का निर्णय लिया है। इस अवसर पर मुख्याध्यापक नरेश कुमार, मा. नरेन्द्र, जगबीर सिंह प्रधान, सुंदरपाल, अनिल कुमार, कुलदीप सिंह आदि मौजूद थे।

अमर उजाला चरखी दादरी 29.8.21

आयोजन — आजादी की अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत बिरोहड़ राजकीय कॉलेज में मनाई मेजर ध्यानचंद का जयंती

हॉकी के जादूगर थे खेल रत्न मेजर ध्यानचंद : डॉ. अमरदीप

संवाद न्यूज एजेंसी

चरखी दादरी। आजादी का अमृत महोत्सव शृंखला के तहत बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में हॉकी के जादूगर एवं खेल रत्न मेजर ध्यानचंद की जयंती पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संयोजक व इतिहास विभाग के अध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने बताया कि 29 अगस्त 1905 को इलाहाबाद में जन्मे मेजर ध्यानचंद ने 22 साल के लंबे कॅरियर में 400 से अधिक गोल कर किए।

उन्होंने लगातार तीन ओलंपिक खेलों में भारत को हॉकी में स्वर्ण पदक दिलाकर इतिहास रचा था। यह वह दौर था, जब भारत एक स्वतंत्र मुल्क नहीं था, बल्कि ब्रिटिश उपनिवेश का हिस्सा था। 1928 के एम्सटर्डम, 1932 के लॉस एंजेलिस और 1936 के बर्लिन ओलंपिक में ब्रिटिश भारत को हॉकी में मिला गोल्ड मेडल आज भी मिसाल है, जिसका श्रेय मेजर ध्यानचंद को ही जाता है।

डॉ. अमरदीप ने कहा कि हॉकी में उनका जादू कुछ इस कदर चला कि वह पूरी दुनिया में हॉकी के जादूगर के नाम से मशहूर हो गए। भारतीय हॉकी को शिखर तक ले जाने में उन्होंने जिस जीवट का परिचय दिया, उसने हर किसी को उनका कायल बना दिया। यहां तक कि जर्मन तानाशाह हिटलर भी उनके मुरीदों में था। कार्यक्रम के अध्यक्ष महाविद्यालय प्राचार्य राजकुमार वर्मा ने बताया कि हिटलर ध्यानचंद से इस कदर प्रभावित कि उसने उन्हें जर्मन सेना में कर्नल रैंक के साथ जर्मनी की नागरिकता की पेशकश भी की थी। लेकिन ध्यानचंद ने यह कहते हुए हिटलर का ऑफर नकार दिया था, हिंदुस्तान मेरा वतन है और मैं वहां खुश हूं।

बिरोहड़ राजकीय कॉलेज में विद्यार्थियों को संबोधित करते वक्ता। संवाद

भूगोल प्राध्यापक ओमबीर ने बताया कि जब वह खेलते थे तो गेंद मानो उनके स्टिक से चिपक जाती थी और हॉलैंड में एक मैच के दौरान उनके स्टिक में चुंबक होने की आशंका के मद्देनजर उसे तोड़कर भी देखा गया था। आयोजन में सवीन, जितेंद्र, डॉ. अजय कुमार, डॉ. राजपाल और अजय सिंह आदि उपस्थित रहे।

23. Dr. Amardeep worked as convener and organised a special Seminar on the 196th Birth Anniversary of Grand Old Man of India, Dadabhai Naoroji on 04.09.2021 under आजादी का अमृत महोत्सव programme and delivered an expert lecture on “Role of Dada Bhai Naorojo and Genesis of Indian Nationalism”.

अमर उजाला, चरखी दादरी 5.9.2021

दादा भाई नौरोजी ने दुनिया के सामने रखा अंग्रेजों का काला सच : अमरदीप

सेमिनार में अपने विचार व्यक्त करते डॉ. अमरदीप। विज्ञप्ति

चरखी दादरी। स्वतंत्रता संग्राम में अग्रणी भूमिका निभाने वाले दादा भाई नौरोजी की 196वीं जयंती पर बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में सेमिनार करवाया गया। इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि दादा भाई नौरोजी देश में आर्थिक राष्ट्रवाद के जन्मदाता थे। उन्होंने अंग्रेजी साम्राज्यवाद का काला सच दुनिया के सामने रखा।

उन्होंने कहा कि दादा भाई नौरोजी के दो दशक लंबे आर्थिक विश्लेषण के बाद उन्होंने कहा था कि ब्रिटिश शासन देश का खून बहाकर मौत की तरफ ले जा रहा है। इससे नाराज होकर ब्रिटिश अधिकारियों ने उन पर देशद्रोह और निष्ठाहीनता का आरोप लगाया। उन्होंने सामाजिक सुधार के क्षेत्र में 1840 लड़कियों के विद्यालय प्रारंभ करके महिला शिक्षा का परचम भी लहराया। सेमिनार में सवीन, जितेंद्र, राजेश कुमार, डॉ. अजय कुमार, डॉ. राजपाल और अजय सिंह आदि उपस्थित रहे। संवाद

चरखी दादरी भास्कर 05-09-2021

दादाभाई का स्वतंत्रता आन्दोलन में अविस्मर्णीय योगदान : राजकुमार

दादाभाई नौरोजी की 196वीं जयंती पर सेमिनार का आयोजन

भास्कर न्यूज़ | चरखी दादरी

गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में स्वतंत्रता संग्राम के अग्रणी दादाभाई नौरोजी की 196वीं जयंती पर सेमीनार का आयोजन किया गया। इस सेमिनार के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि दादा भाई नौरोजी भारत में आर्थिक राष्ट्रवाद के जन्मदाता थे। वे पहले भारतीय थे जिन्होंने अंग्रेजी साम्राज्यवाद का काला सच दुनिया के सामने रखा।

दादाभाई नौरोजी के दो दशक लंबे आर्थिक विश्लेषण के बाद उन्होंने कहा था कि ब्रिटिश शासन, भारत का 'ख़ून बहा कर' मौत की तरफ ले जा रहा था और भयावह अकाल पैदा कर रहा था। डॉ. अमरदीप ने रेखांकित किया कि साम्राज्यवाद के कारण उपनिवेशों से कैसे "धन बाहर गया" पर दादाभाई नौरोजी के विचार ने यूरोपीय समाजवादियों, विलियम जेनिंग्स ब्रायन जैसे अमेरिकी प्रगतिशील और संभवतः कार्ल मार्क्स को भी इस मुद्दे से अवगत कराया। डॉ. अमरदीप ने कहा कि सामाजिक सुधार के क्षेत्र में 1840 लड़कियों के विद्यालय प्रारंभ करके महिला शिक्षा का परचम लहराने वाले दादाभाई नौरोजी ने राजनीतिक आन्दोलन में भी अग्रणी भूमिका निभाई थी। 1906 में भारत के लिए स्वशासन की मांग करके राष्ट्रीय आंदोलन को नई जान फूंकी। प्राचार्य एवं सेमिनार के अध्यक्ष राजकुमार वर्मा ने कहा कि दादाभाई नौरोजी का भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में अविस्मर्णीय योगदान था। 1905 में जब कांग्रेस नरम और गरम दल में बंटी हुई थी तक एकता की राह दादाभाई ने ही दिखाई थी। इस मौके पर सवीन, जितेंद्र, राजेश कुमार, डॉ. अजय कुमार, डॉ. राजपाल और अजय सिंह इत्यादि उपस्थित रहे।

जरूरतमंदों की मदद कर पुण्य कमाया

चरखी दादरी| खुशियों की दीवार जहां जरूरतमंद लोगों के लिए जरूरत का सामान निःशुल्क मुहैया करा रही है। शनिवार को खुशियों के दीवार सदस्यों ने शहर के विभिन्न स्लम एरिया में जरूरत का सामान मुहैया करवाया। सामाजिक कार्यकर्ता संजय रामफल ने कहा की मानवता की सेवा ही भगवान की पूजा है। प्रत्येक व्यक्ति को इसके लिए आगे आना चाहिए।

दीन हीन की सेवा ही सबसे बड़ा पुण्य कार्य होता है। संजय रामफल ने कहा कि अगर आप कोई भी ऐसा पुण्य का काम करना चाह रहे हैं जिससे जरूरतमंद लोगों के बच्चों की जरूरत को पूरा किया जा सके तो आप खुशियों की दीवार के साथ मिलकर यह कार्य कर सकते हैं। यहां दर्शन सिंह, अभिषेक जैन भी मौजूद थे।

बिरोहड़ कालेज में दादाभाई नौरोजी को किया याद

दैनिक जागरण, चरखी दादरी, 5.9.2021

बिरोहड के सरकारी कालेज में विद्यार्थियों को दादाभाई नौरोजी के जीवन के बारे में बताते वक्ता। ● विज्ञप्ति।

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में स्वतंत्रता संग्राम के अग्रणी दादाभाई नौरोजी की 196वीं जयंती पर सेमीनार का आयोजन किया गया। इस सेमीनार के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डा. अमरदीप ने कहा कि दादा भाई नौरोजी भारत में आर्थिक राष्ट्रवाद के जन्मदाता थे।

वे पहले भारतीय थे जिन्होंने अंग्रेजी साम्राज्यवाद का काला सच दुनिया के सामने रखा। दादाभाई नौरोजी के दो दशक लंबे आर्थिक विश्लेषण के बाद उन्होंने कहा था कि ब्रिटिश शासन, भारत का खून बहा कर मौत की तरफ ले जा रहा है। इससे नाराज कई बिटानियों ने उन पर देशद्रोह और निष्ठाहीनता का आरोप लगाया। परंतु दादाभाई को रोक नहीं पाए। डा. अमरदीप ने रेखांकित किया कि साम्राज्यवाद के कारण उपनिवेशों से कैसे धन बाहर गया पर दादाभाई नौरोजी के विचार ने यूरोपीय समाजवादियों, विलियम जेनिंग्स ब्रायन जैसे अमेरिकी प्रगतिशील और संभवतः कार्ल मार्क्स को भी इस मुदे से अवगत कराया। महाविद्यालय के प्राचार्य एवं सेमिनार के अध्यक्ष राजकुमार वर्मा ने कहा कि दादा भाई नौरोजी का भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में अविस्मर्णीय योगदान था। सेमिनार में सवीन, जितेन्द्र, राजेश कुमार, डा. अजय कुमार, डा. राजपाल और अजय सिंह इत्यादि उपस्थित रहे।

24. Dr. Amardeep worked as convener and organized a special Seminar on the 106th martyrdom of Great Revolutionary Jatindra Nath on 10.09.2021 under आजादी का अमृत महोत्सव programme and delivered an expert lecture on "Revolutionary Movement in Bengal and Contribution of Jatindra Nath".

दैनिक भास्कर

चरखी दादरी भास्कर 11-09-2021

सेमिनार • बिरोहड़ के राजकीय कॉलेज में महान क्रांतिकारी जतिंद्र नाथ मुखर्जी को किया याद

जतिंद्र नाथ ने हिलाया था ब्रिटिश साम्राज्य: डॉ. अमरदीप

भास्कर न्यूज़ | चरखी दादरी

गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में स्वतंत्रता संग्राम के महान क्रांतिकारी जतिंद्र नाथ मुखर्जी की 106वीं शहीदी दिवस पर सेमीनार का आयोजन किया गया। सेमिनार के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि ये जतिंद्र नाथ मुखर्जी थे जिनके अदम्य साहस और वीरता ने तत्कालीन ब्रिटिश साम्राज्य को हिला दिया था और भारतीय उपमहाद्वीप की स्वतंत्रता के अग्रदूत बनकर स्वतंत्रता आंदोलन को नई दिशा दी।

डॉ. अमरदीप ने बताया कि एक खूंखार बाघ को अपने छोटे से खंजर से मारकर गिराने वाले इस महान क्रांतिकारी को इतिहास में बाघा जतिन के नाम से जाना जाता है और इनका जन्म 7 दिसंबर 1879 को तत्कालीन बंगाल प्रेसीडेंसी में हुआ था। बाघा जतिन ने सरकारी नौकरी छोड़कर अनुशीलन समिति और युगांतर से जुड़कर देश को आजाद करवाने का प्रण लिया और साथ ही स्वामी विवेकानंद और अरविन्द घोष ने अपने जीवन को देश पर बलिदान करने के लिए प्रेरित किया। डॉ. अमरदीप ने बताया कि अप्रैल 1907 में बंगाल के सिलीगुड़ी के भीड़-भाड़ वाले रेलवे प्लेटफॉर्म पर यह एक नियमित दिन था।

एक बंगाली युवक बीमार सह-यात्री की सेवा करने के लिए पानी लेकर अपने डिब्बे में जा रहा था। लेकिन वह अनजाने में एक ब्रिटिश कप्तान से टकरा गया। मूल निवासियों के प्रति सामान्य द्वेष भाव रखते हुए कप्तान ने उस व्यक्ति को पीटा। कुछ मिनटों के बाद, बाघा जतिन ने उन सभी ब्रिटिश सैनिकों को बहुत पिटाई की।

डॉ. अमरदीप ने बताया कि बाघा जतिन मानते थे कि देश को आजाद करने के लिए क्रांति आवश्यक है और इसी क्रम में 10 सितंबर 1915 को अंग्रेजों से एक भयंकर मुठभेड़ में शहीद हो गए। प्राचार्य राजकुमार वर्मा ने कहा कि बाघा जतिन ने भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन की जीवटता को नई दिशा दी और आजादी दिलाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। आज हमें यह आजादी संभाल कर रखनी है। सेमिनार में सवीन, ओमबीर, राजेश कुमार इत्यादि प्राध्यापक उपस्थित रहे।

राजकीय महाविद्यालय में आयोजित सेमिनार में मौजूद वक्तागण।

अमर उजाला, चरखी दादरी 11.9.21

बाघा जतिन ने हिला दिया था ब्रिटिश साम्राज्य : डॉ. अमरदीप

बिरोहड़ राजकीय कॉलेज में आयोजित कार्यक्रम में जानकारी देते हुए वक्ता। संवाद

संवाद न्यूज एजेंसी

चरखी दादरी। आजादी का अमृत महोत्सव शृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में क्रांतिकारी जतिंद्रनाथ मुखर्जी के 106वीं शहीदी दिवस पर विशेष सेमिनार किया गया।

सेमिनार के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि जतिंद्रनाथ मुखर्जी के अदम्य साहस और वीरता ने तत्कालीन ब्रिटिश साम्राज्य को हिला दिया था। उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन को नई दिशा दी। डॉ. अमरदीप ने बताया कि एक खूंखार बाघ को अपने छोटे से खंजर से मार गिराने वाले इस क्रांतिकारी को इतिहास में बाघा जतिन के नाम से जाना जाता है। इनका जन्म सात दिसंबर 1879 को तत्कालीन बंगाल प्रेजिडेंसी में हुआ था। बाघा जतिन ने सरकारी नौकरी छोड़कर अनुशीलन समिति और युगांतर से जुड़कर देश को आजाद करवाने का प्रण लिया। बाघा जतिन मानते थे कि देश को आजाद करवाने के लिए क्रांति आवश्यक है और इसी क्रम में 10 सितंबर 1915 को अंग्रेजों से मुठभेड़ में शहीद हो गए। महाविद्यालय के प्राचार्य राजकुमार वर्मा ने कहा कि बाघा जतिन ने भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन की जीवटता को नई दिशा दी। इस अवसर पर सवीन, ओमबीर, राजेश कुमार आदि प्राध्यापक उपस्थित रहे।

विसर्जन किये

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 11.9.21

क्रांतिकारी जतिंद्र नाथ को किया याद

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में स्वतंत्रता संग्राम के महान क्रांतिकारी जतिंद्र नाथ मुखर्जी की शहादत को याद करते हुए विशेष सेमिनार का आयोजन किया गया।

इस सेमिनार के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डा. अमरदीप ने कहा कि जतिंद्र नाथ मुखर्जी के अदम्य साहस और वीरता ने तत्कालीन ब्रिटिश साम्राज्य को हिला दिया था और भारतीय उपमहाद्वीप की स्वतंत्रता के अग्रदूत बनकर स्वतंत्रता आंदोलन को नई दिशा दी।

इतिहास में बाघा जतिन के नाम से भी जाना जाता है : डा. अमरदीप ने बताया कि एक खूंखार बाघ को अपने छोटे से खंजर से मारकर गिराने वाले इस महान क्रांतिकारी को इतिहास में बाघा जतिन के नाम से भी जाना जाता है। इनका जन्म 7 दिसंबर 1879 को तत्कालीन बंगाल प्रेसीडेंसी में हुआ था। बाघा जतिन ने सरकारी नौकरी छोड़कर अनुशीलन समिति और युगांतर से जुड़कर देश को आजाद करवाने का प्रण लिया और साथ ही स्वामी विवेकानंद और अरविंद घोष ने अपने जीवन को देश पर बलिदान करने के लिए प्रेरित किया। महाविद्यालय के प्राचार्य एवं सेमीनार के अध्यक्ष राजकुमार वर्मा ने कहा कि बाघा जतिन ने भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन को नई दिशा दी। इस मौके पर सवीन, ओमबीर, राजेश कुमार भी उपस्थित रहे।

चरखी दादरी के गांव बिरोहड़ के सरकारी कालेज में आयोजित विस्तार व्याख्यान में अपने विचार रखते डा. अमरदीप। ● उन्हीं के सौजन्य से।

25. Dr. Amardeep worked as convener and organized a special Seminar on the 92^{nd} martyrdom of Great Revolutionary Jatin Das on 13.09.2021 under आजादी का अमृत महोत्सव programme and delivered an expert lecture on "Life and Struggle of Jatin Das and Revolutionary Movement in India".

दैनिक भास्कर चरखी दादरी भास्कर 14-09-2021

क्रांतिकारी जतिंद्र ने आजादी के लिए जेल में अपनी जान दी : डॉ. अमरदीप

बिरोहड़ के राजकीय कॉलेज में 92वें शहीदी दिवस पर सेमिनार आयोजित

भास्कर न्यूज | चरखी दादरी

गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में स्वतंत्रता संग्राम के अमर क्रांतिकारी जतिंद्र नाथ दास की 92वीं शहीदी दिवस पर सेमिनार का आयोजन किया गया।

इस सेमिनार के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि ये जतिंद्र दास वह क्रांतिकारी जिसने देश की आजादी के लिए जेल में अपनी जान दी थी और ब्रिटिश हुकूमत का अमानवीय चेहरा सबके सामने ला दिया था। वे जेल में शहीद होने वाले पहले क्रांतिकारी थे। डॉ. अमरदीप ने कहा कि कोलकाता के एक साधारण बंगाली परिवार में 27 अक्टूबर 1904 को जन्मे जतिंद्रनाथ दास महज 16 साल की उम्र में ही देश की आजादी के आंदोलन में कूद गए थे। महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन में भी उन्होंने हिस्सा लिया। कलकत्ता के विद्यासागर कॉलेज में पढ़ने वाले जतिंद्र को विदेशी कपड़ों की दुकान पर धरना देते हुए गिरफ्तार कर लिया गया और उन्हें 6 महीने की सजा हुई।

भारत माता के लिए कुछ करने का जज्बा लिए जतिंद्रनाथ प्रसिद्ध क्रांतिकारी सचिंद्रनाथ सान्याल के संपर्क में आए। जिसके बाद वे क्रांतिकारी संगठन 'हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन' के अहम सदस्य बन गये। साल 1925 में अंग्रेजों ने उन्हें 'दक्षिणेश्वर बम कांड' और 'काकोरी कांड' के सिलसिले में गिरफ्तार कर लिया। हालांकि सबूत नहीं मिलने के कारण उन पर मुकदमा तो नहीं चल पाया, लेकिन वे नजरबन्द कर लिए गए। जेल में भारतीय कैदियों के साथ हो रहे बुरे व्यवहार के विरोध में उन्होंने भूख हड़ताल की।

सेमिनार में सवीन, जितेंद्र, ओमबीर, डॉ. अजय कुमार, डॉ. राजपाल इत्यादि प्राध्यापक उपस्थित रहे।

बिरोहड़ के राजकीय कॉलेज में सेमिनार में अपनी बात रखते वक्ता।

शामिल किए गए हैं। ... फीस जमा

अमर उजाला, चरखी दादरी 14.9.21

'शहीद जतिंद्रनाथ दास ने बनाया था बम'

बिरोहड़ कॉलेज में सेमिनार में वक्ताओं ने शहीद जितेंद्रनाथ के योगदान को किया याद

संवाद न्यूज एजेंसी

शहीद के सम्मान में आयोजित कार्यक्रम में जानकारी देते प्रवक्ता। संवाद

चरखी दादरी। आजादी के अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के इतिहास विभाग के तत्वावधान में स्वतंत्रता संग्राम के अमर क्रांतिकारी जतिंद्रनाथदास की 92 वें शहीदी दिवस पर सेमिनार किया गया।

सेमिनार के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि जतिंद्र दास ने देश की आजादी के लिए जेल में अपनी जान दी थी और ब्रिटिश हुकूमत का अमानवीय चेहरा सबके सामने ला दिया था। वे जेल में शहीद होने वाले पहले क्रांतिकारी थे। डॉ. अमरदीप ने कहा कि कोलकाता के साधारण बंगाली परिवार में 27 अक्तूबर 1904 को जन्मे जतिंद्रनाथदास महज 16 साल की उम्र में ही देश की आजादी के आंदोलन में कूद गए थे। महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन में भी उन्होंने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। कलकत्ता के विद्यासागर कॉलेज में पढ़ने वाले जतिंद्र को विदेशी कपड़ों की दुकान पर धरना देते हुए गिरफ्तार कर लिया गया और उन्हें छह महीने की सजा हुई। भारत माता के लिए कुछ करने का जज्बा लिए जतिंद्रनाथ प्रसिद्ध क्रांतिकारी सचिंद्रनाथ सान्याल के संपर्क में आए। जिसके बाद वे क्रांतिकारी संगठन हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन के सदस्य बन गये। वर्ष 1925 में अंग्रेजों ने उन्हें दक्षिणेश्वर बम कांड और काकोरी कांड के सिलसिले में गिरफ्तार कर लिया। हालांकि सबूत नहीं मिलने के कारण उन पर मुकदमा तो नहीं चल पाया लेकिन वे नजरबंद कर लिए गए। जेल में भारतीय कैदियों के साथ हो रहे बुरे व्यवहार के विरोध में उन्होंने भूख हड़ताल की। जब जतिंद्रनाथ की हालत बिगड़ने लगी तो अंग्रेज सरकार ने डरकर 21 दिन बाद उन्हें रिहा कर दिया। उनकी सरदार भगत सिंह से भेंट हुई और उनके अनुरोध पर बम बनाने के लिए आगरा आए। आठ अप्रैल 1929 को भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने जो बम केंद्रीय असेंबली में फेंके वे इन्हीं के द्वारा बनाये हुए थे।

14 जून 1929 को जतिंद्र गिरफ्तार कर लिए गए और उन पर लाहौर षडयंत्र केस में मुकदमा चला। 13 सितंबर 1929 को जतिंद्रनाथदास ने अपने प्राण गंवा दिए। कार्यक्रम में सवीन, जितेंद्र, ओमबीर, डॉ. अजय कुमार, डॉ. राजपाल आदि प्राध्यापक उपस्थित रहे।

26. Dr. Amardeep worked as convener and organized a special Seminar on the 142nd Birth Anniversary of Great Revolutionary Reformer and Freedom Fighter E.V. Ramaswami Periyar on 17.09.2021 under आजादी का अमृत महोत्सव programme and delivered an expert lecture on “Life and Struggle of E.V. Ramaswami Periyar and His Contribution to National Movement”.

दैनिक भास्कर चरखी दादरी भास्कर 18-09-2021

चरखी दादरी

राजकीय कॉलेज में रामास्वामी पेरियार के 142वें जन्मदिवस पर सेमिनार आयोजित

रामास्वामी ने आत्म सम्मान, महिला अधिकार समेत कई मुद्दों पर जोर दिया : डॉ. अमरदीप

भास्कर न्यूज़ | चरखी दादरी

गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय के इतिहास विभाग के तत्वावधान में समाज सुधारक ईवी रामास्वामी पेरियार के 142वें जन्मदिवस पर सेमिनार का आयोजन किया गया। इस सेमिनार के संयोजक इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि रामास्वामी एक महान राष्ट्रवादी, राजनेता और सामाजिक कार्यकर्ता थे। इनके प्रशंसक इन्हें आदर के साथ 'पेरियार' संबोधित करते थे। पेरियार ईवी रामास्वामी ने तर्कवाद, आत्म सम्मान और महिला अधिकार जैसे मुद्दों पर जोर दिया और जाति प्रथा का घोर विरोध किया। इन्होंने 'आत्म सम्मान आन्दोलन' या 'द्रविड़ आंदोलन' प्रारंभ किया था। उन्होंने जस्टिस पार्टी का गठन किया जोबाद में जाकर 'द्रविड़ कड़गम' हो गई। वे आजीवन रुढ़िवादी हिंदुत्व का विरोध करते रहे और हिन्दी के अनिवार्य शिक्षण का भी उन्होंने घोर विरोध किया। उन्होंने दक्षिण भारतीय समाज के शोषित वर्ग के लिए आजीवन कार्य किया उनके कार्यों से ही तमिल समाज में बहुत परिवर्तन आया और जातिगत भेद-भाव भी बहुत हद तक कम हुआ। डॉ. अमरदीप ने कहा यूनेस्को ने भी अपने उद्धरण में उन्हें 'नए युग का पैगम्बर, दक्षिण पूर्व एशिया का सुकरात, समाज सुधार आंदोलन के पिता, अज्ञानता, अंधविश्वास और बेकार के रीति-रिवाज का दुश्मन' कहा। सामाजिक सुधार आंदोलन के साथ साथ पेरियार रामास्वामी ने कांग्रेस द्वारा चलाये गये विभिन्न आंदोलनों में हिस्सा लिया तथा नेतृत्व भी किया। सेमिनार में डॉ. सुरेंद्र सिंह, सवीन, ओमबीर, राजेश कुमार, पवन कुमार, अजय सिंह, डॉ. राजपाल गुलिया इत्यादि प्राध्यापक उपस्थित रहे।

चरखी दादरी। गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में कार्यक्रम के दौरान अपनी बात रखते वक्ता।

Dadri

my city **चरखी दादरी-आसपास** शनि

अमर उजाला, चरखी दादरी 18.9.21

जयंती पर महान समाज सुधारक रामास्वामी पेरियार को किया नमन

चरखी दादरी। आजादी का अमृत महोत्सव शृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में इतिहास विभाग के तत्वावधान में स्वतंत्रता सेनानी एवं महान समाज सुधारक ईवी रामास्वामी पेरियार के 142वें जयंती पर विशेष सेमिनार आयोजित किया गया। सेमिनार के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि ईवी रामास्वामी महान राष्ट्रवादी, राजनेता और सामाजिक कार्यकर्ता थे। रामास्वामी ने तर्कवाद, आत्मसम्मान और महिला अधिकार जैसे मुद्दों पर जोर दिया। उन्होंने जाति प्रथा का घोर विरोध किया। उन्होंने जस्टिस पार्टी का गठन किया। उन्होंने दक्षिण भारतीय समाज के शोषित वर्ग के लिए आजीवन कार्य किया। सामाजिक सुधार आंदोलन के साथ- साथ पेरियार रामास्वामी ने कांग्रेस द्वारा चलाये गये विभिन्न आंदोलनों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। सेमिनार में डॉ. सुरेंद्र सिंह, सवीन, ओमबीर, अजय सिंह, डॉ.राजपाल गुलिया आदि प्राध्यापक उपस्थित रहे। संवाद

27. Dr. Amardeep organised a special tree plantation drive on 18.09.2021 on the 27th martyrdom and contribution of great revolutionary and freedom fighter Jaidev Kapoor and planted trees on this occasion under आज़ादी का अमृत महोत्सव कार्यक्रम and described his contribution in Freedom struggle..

लिया है। चिंता कभी नहीं होती। असलियत ये है कि रोक रखा।

अमर उजाला, झज्जर, 19.9.21

क्रांतिकारी जयदेव कपूर की याद में किया पौधरोपण

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। आजादी का अमृत महोत्सव शृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में स्वतंत्रता सेनानी और महान क्रांतिकारी जयदेव कपूर के योगदान पर पौधरोपण कार्यक्रम किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि जयदेव कपूर जैसे अनेक महान क्रांतिकारी के अपूर्व योगदान से हमें आजादी रूपी फल मिला है। इसलिए आज उनको नमन करते हुए बिरोहड़ महाविद्यालय परिसर में प्राचार्य राजकुमार वर्मा, डॉ. अमरदीप एवं सुनीता बेनीवाल ने फलों के पौधों का रोपण किया। डॉ. अमरदीप ने कहा कि देश में लाखों ऐसे क्रांतिकारी हुए जिन्होंने अंग्रेजों के आगे घुटने नहीं टेके और बर्बरतापूर्ण यातनाएं हंसते हुए झेलीं।

पौधरोपण करते स्टाफ सदस्य। संवाद

ऐसे ही क्रांतिकारी थे जयदेव कपूर। वे हरदोई के रहने वाले थे। असेंबली बम विस्फोट में षड्यंत्रकर्ता के रूप में सजा पाने के बाद 60 दिन अंडमान की जेल में रहे और प्रति दिन 30 बैंतों की सजा हंसते हुए झेली। जयदेव अपने दोस्त शिव वर्मा के साथ कानपुर के डीएवी हॉस्टल में रहते हुए क्रांतिकारियों के संपर्क में आए। देश को अंग्रजों के चंगुल से आजाद कराने वालों की टोली में शामिल हो गए।

प्राचार्य राजकुमार वर्मा ने इतिहास का स्मरण करते हुए बताया कि लाहौर षड्यंत्र केस में जयदेव को काले पानी की सजा हुई थी। जयदेव कपूर 1946 में रिहा हुए। 19 सितंबर 1994 में जयदेव कपूर का निधन हो गया। इस अवसर पर डॉ. नरेंद्र सिंह, संदीप, पूर्ण सिंह और अमरदीप इत्यादि उपस्थित रहे।

एडवांस बुकिंग करवाई। परीक्षा केंद्रों तक भक्तों को पाकर भगवान श्रीकृष्ण ने भी मित्तल, मुकेश बंसल, रवि आदि भी

बसें भेजने से रोडवेज ...

अमर उजाला, चरखी दादरी 19.9.21

क्रांतिकारी की याद में किया पौधरोपण

राजकीय महाविद्यालय में क्रांतिकारी जयदेव कपूर के योगदान को किया याद

संवाद न्यूज एजेंसी

बिरोहड़ राजकीय कॉलेज में पौधरोपण करते प्रोफेसर। *विज्ञप्ति*

चरखी दादरी। आजादी का अमृत महोत्सव शृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में क्रांतिकारी जयदेव कपूर के योगदान पर कार्यक्रम हुआ। इस दौरान क्रांतिकारी की याद में प्राचार्य राजकुमार वर्मा, डॉ. अमरदीप व सुनीता बेनीवाल ने महाविद्यालय में पौधरोपण किया।

इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि देश में हजारों क्रांतिकारियों ने अंग्रेजों के आगे घुटने नहीं टेके और बर्बरतापूर्ण यातनाएं हंसते हुए झेली। ऐसे ही एक क्रांतिकारी जयदेव कपूर थे। असेंबली बम विस्फोट में षड्यंत्रकर्ता के रूप में सजा पाई। जयदेव अपने दोस्त शिव वर्मा के साथ कानपुर के डीएवी हॉस्टल में रहते हुए क्रांतिकारियों के संपर्क में आए। इसके बाद वे देश को आजाद कराने वालों की टोली में शामिल हो गए। इस दौरान वे चंद्रशेखर आजाद और भगत सिंह के संपर्क में आए। जब सेंट्रल असेंबली में बम फेंकने की योजना बनी तो आठ अप्रैल 1929 को जयदेव कपूर और शिव वर्मा ने भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त के लिए प्रवेश पास का इंतजाम कर असेंबली में दाखिल करवाया था। जब भगत सिंह को फांसी हुई थी, उस समय भगत सिंह अपने जूते और घड़ी जयदेव कपूर को ही देकर गये थे। महाविद्यालय प्राचार्य राजकुमार वर्मा ने बताया कि जयदेव कपूर 1946 में रिहा हुए और 19 सितंबर 1994 में उनका निधन हो गया। इस अवसर पर डॉ. नरेंद्र सिंह, संदीप व पूर्ण सिंह आदि उपस्थित रहे।

चरखी दादरी भास्कर 19-09-2021

बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में पौधरोपण करते कॉलेज स्टॉफ।

जयदेव कपूर जैसे महान क्रांतिकारियों की बदौलत हमें मिली आजादीः डॉ. अमरदीप

चरखी दादरी | बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय के इतिहास विभाग के तत्वावधान में महान क्रांतिकारी जयदेव कपूर के योगदान पर पौधारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि जयदेव कपूर जैसे अनेक महान क्रांतिकारी के अभूतपूर्व योगदान से हमें आजादी रूपी फल मिला है। इसलिए आज उनको नमन करते हुए महाविद्यालय परिसर में फलदायी वृक्षों का रोपण प्राचार्य राजकुमार वर्मा, डॉ. अमरदीप व सुनीता बेनीवाल ने किया। डॉ. अमरदीप ने कहा कि देश में लाखों ऐसे क्रांतिकारी हुए जिन्होंने अंग्रेजों के आगे घुटने नहीं टेके और बर्बरतापूर्ण यातनाएं हंसते हुए झेलीं। ऐसे ही क्रांतिकारी थे जयदेव कपूर। वे हरदोई के रहने वाले थे। कार्यक्रम के अध्यक्ष और प्राचार्य राजकुमार वर्मा ने इतिहास का स्मरण करते हुए बताया कि लाहौर षड्यंत्र केस में जयदेव को काले पानी की सजा हुई थी और अंडमान की जेल में उनको 60 दिनों तक रोज सुबह 30 बेंत मार खाने की सजा मिली। जयदेव कपूर 1946 में रिहा हुए। 19 सितंबर 1994 में जयदेव कपूर का निधन हो गया। इस अवसर पर डॉ. नरेंद्र सिंह, संदीप, पूर्ण सिंह, अमरदीप इत्यादि उपस्थित रहे।

28. Dr. Amardeep worked as Convener and organised National Seminar on the 158^{th} Shaheedi Diwas of Great Freddom Fighter Rao Tula Ram on 22.09.2021 and Invited Sh.Sonu Yadav, Asst. Professor in History, Dept. of History, University of Delhi, Delhi.

Charkhi Dadri | My City | 23

राशन से अपने लिए रोजाना पौष्टिक

अमर उजाला 23.9.21

स्वतंत्रता आंदोलन के अग्रणी योद्धा थे राव तुलाराम : डॉ. अमरदीप

चरखी दादरी। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में महान योद्धा राव तुलाराम के 158 वीं शहीदी दिवस पर राष्ट्रीय सेमीनार करवाया गया।

इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि राव तुलाराम भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के अग्रणी योद्धा थे। 1850 के दशक में जिस समय देश में अंग्रेजों की तूती बोलती थी उस समय अंग्रेजों के नवीन साम्राज्य को हिलाकर रख दिया था। सेमिनार के मुख्य वक्ता दिल्ली विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग से सोनू यादव रहे। सोनू यादव ने कहा कि 16 नवंबर 1857 को नसीबपुर नारनौल में राव तुलाराम का मुकाबला अंग्रेजों से हुआ। राव तुलाराम ने अंग्रेजों की फौज पर हमला किया जिससे अंग्रेज सिपाही दंग रह गये। इस लड़ाई में दो बड़े अंग्रेज अफसर कर्नल जॉन ग्रांट गेरार्ड और कैप्टन वाल्श मारे गए। संवाद

दैनिक भास्कर
चरखी दादरी भास्कर 23-09-2021

'राव तुलाराम भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के अग्रणी योद्धा थे'

बिरोहड़ के स्कूल में सेमिनार का आयोजन

भास्कर न्यूज | चरखी दादरी

गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय के इतिहास विभाग के तत्वावधान में स्वतंत्रता संग्राम के महान योद्धा राव तुला राम की 158वीं शहीदी दिवस पर राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया। सेमिनार के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि राव तुला राम भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के अग्रणी योद्धा थे। 1850 के दशक में जिस समय भारत में अंग्रेजों की तूती बोलती थी उस समय अंग्रेजों के नवीन साम्राज्य को हिलाकर रख दिया था और 1857 की महान क्रांति के समय दिल्ली जीतना राव तुला राम के रहते अंग्रेजों के लिए मुश्किल हो गया था|

सेमिनार के मुख्य वक्ता दिल्ली विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग से सोनू यादव रहे। सोनू यादव ने बताया कि जब 1857 की महान क्रांति प्रारंभ हुई तो राव तुला राम ने हर प्रकार से, आर्थिक रुप से, रशद सामग्री, युद्ध सामग्री इत्यादि दिल्ली के क्रांतिकारियों को पहुंचाकर अंग्रेजों के लिए दिल्ली जीतना मुश्किल कर दिया था। 16 नवंबर 1857 को नसीबपुर, नारनौल में राव तुलाराम का मुकाबला अंग्रेजों से हुआ। अंग्रेजों को लगा था की वो आसानी से इस विद्रोह को दबा देंगे। लेकिन राव तुलाराम ने अंग्रेजों की फौज पर भयंकर हमला किया जिससे अंग्रेज सिपाही दंग रह गये। इस लड़ाई में दो बड़े अंग्रेज अफ़सर कर्नल जॉन ग्रांट गेराई और कैप्टन वाल्श मारे गये जबकि दूसरे बहुत से अफ़सर घायल हो गये। इससे पहले की राव तुलाराम इस लड़ाई में जीत कर विद्रोह की आग को दूसरे हिस्सों तक ले जाते अंग्रेजों के जयपुर, अलवर, नाभा और पटियाला से वफ़ादार राजाओं ने अंग्रेजों की मदद के लिए सेनाएं भेज दी। जिससे लड़ाई में अंग्रेजों का पलड़ा फिर भारी हो गया और तुलाराम के साथी राव किशन सिंह, रामलाल और शहजादा मोहम्मद आज़म मारे गये।

डॉ. कर्मवीर यादव, राजकीय महाविद्यालय, कंवाली ने कहा कि क्रांति की आग को जिंदा रखने के लिए राव तुलाराम को जंग का मैदान छोड़कर जाना पड़ा और वो तात्या टोपे की सेना के साथ जा मिले। हालाकि अंग्रेजों ने इस क्रांति को पूरी तरह दबा दिया लेकिन राव तुलाराम की लड़ाई अब भी जारी थी। वो रूस पहुंचे या नहीं इस बात के प्रमाण नहीं हैं लेकिन कहा जाता है उनके द्वारा ले जाए गए पत्र रूस तक पहुंच गये थे। 23 सितंबर 1862 काबुल में उनकी मृत्यु हो गई थी। इतिहास प्राध्यापक सवीन ने सभी प्रतिभागियों का धन्यवाद किया। इस सेमिनार में प्रोफेसर दलजीत, साहिल, डॉ. सुरेन्द्र सिंह, जितेंद्र, रश्मि, ओमबीर, पवन कुमार, राजेश कुमार, डॉ. अजय कुमार, अजय सिंह इत्यादि प्राध्यापकगण उपस्थित रहे।

29. Dr. Amardeep worked as Convener and organised National Seminar on the 158th Birth Anniversary of Shaheed-e-Azam & Great Freddom Fighter Bhagat Singh on 28.09.2021 and delivered an expert lecture on "Shaheed-e-Azam Bhagat Singh and Freedom Struggle: Unexplored Legacy"

व बीएससी में 80 सीटें हैं। पहली और दूसरी मेरिट लिस्ट में ... बीएससी मेडिकल में 62, बीबीए में 56 व ... अक्तूबर को यज्ञ पूर्णाहुति के साथ समारोह का समापन होगा। संवाद

झज्जर, अमर उजाला, 29.9.21

'भगत सिंह क्रांतिकारी ही नहीं, अपने आप में आंदोलन थे'

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। आजादी के अमृत महोत्सव के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में स्वतंत्रता संग्राम के अमर क्रांतिकारी एवं शहीद-ए-आजम भगत सिंह की 114वीं जयंती पर सेमिनार का आयोजन किया गया। इस अवसर पर राजकुमार वर्मा, डॉ. अमरदीप और पवन कुमार ने पौधरोपण किया।

सेमिनार के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि भगत सिंह एक महान क्रांतिकारी थे, जिन्होंने अंग्रेजों को चेताया था कि ''तुम मुझे मार सकते हो, पर मेरे विचारों को नहीं''। भगत सिंह केवल एक क्रांतिकारी नहीं थे, बल्कि अपने आप में एक आंदोलन थे।

उन्होंने कहा कि आज युवाओं को अधिकतर अपने लक्ष्य का भी पता नहीं होता, जबकि आजादी के इस महान योद्धा ने मात्र 23 साल की उम्र में अपने प्राणों की आहुति देकर भारतीय युवाओं के लिए एक अमर संदेश छोड़ा था। उन्होंने कहा

सेमिनार में बच्चों को संबोधित करता वक्ता। संवाद

राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में सेमिनार आयोजित

था कि मेरा धर्म मेरे देश की सेवा करना है। अमृतसर में 13 अप्रैल 1919 को हुए जलियांवाला बाग हत्याकांड ने भगत सिंह की सोच पर गहरा प्रभाव डाला था।

लाहौर के नेशनल कॉलेज की पढ़ाई छोड़कर भगत सिंह ने भारत की आजादी के लिए नौजवान भारत सभा की स्थापना की थी। वर्ष 1922 में चौरीचौरा घटना के बाद महात्मा गांधी ने जब असहयोग आंदोलन को वापस लिया था, तब भगत सिंह बहुत निराश हुए। उसके बाद उनका अहिंसा से विश्वास कमजोर हो गया और वह इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि सशस्त्र क्रांति ही स्वतंत्रता दिलाने का एक मात्र रास्ता है।

महाविद्यालय के प्राचार्य एवं सेमिनार के अध्यक्ष राजकुमार वर्मा ने कहा कि भगत सिंह ने संघर्ष एवं आंदोलन की नई मिशाल रखी और अंग्रेजी हुकूमत के जुल्म सबके सामने लाकर रख दिए। लाहौर षड्यंत्र केस की सुनवाई ने तत्कालीन भारतीय नौजवानों में ब्रिटिश गुलामी को उखाड़ फेंकने की ललक पैदा की। इस विशेष सेमिनार में सवीन, जितेंद्र, पवन कुमार, अजय सिंह इत्यादि उपस्थित रहे।